Teachers' Manual

हिंदी

व्याकरण

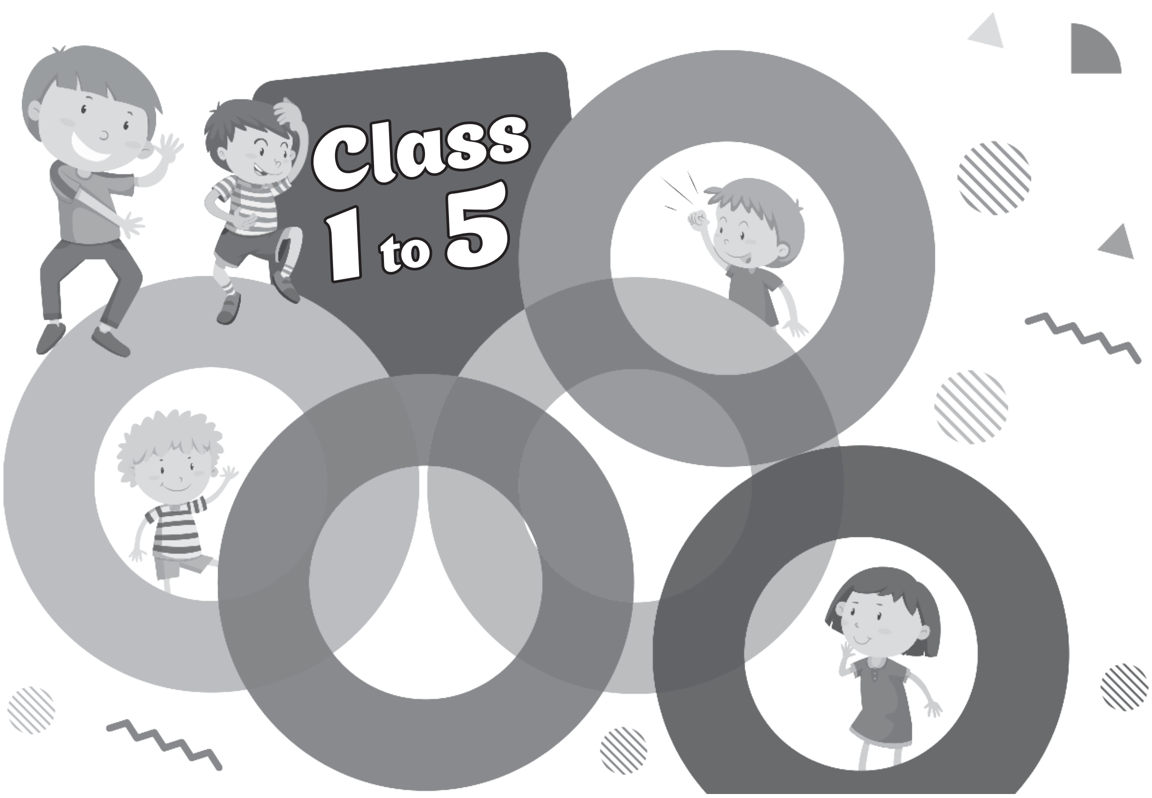

© Publishers

All Rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted by the publisher.

Every care has been taken to minimize the mistakes regarding printing and other aspects of the book. However, there is always a scope of improvement. Any suggestion for further improvement of this book would be greatly acknowledged. Published and a product of Student Advisor Publication Pvt. Ltd. E-38, Industrial Area, Mathura (U.P.)

हिन्दी व्याकरण–1

1. अध्याय भाषा (Language)

क. 1. अपने मन के विचारों को दूसरों को समझाना तथा दूसरों के विचारों को समझने का माध्यम भाषा कहलाती है।

2. भाषा के प्रकार —

(i) मौखिक,

(ii) लिखित।

3. पत्र लिखना, सुलेख लिखना भाषा का लिखित रूप है।

4. फोन पर बात करना, नेता द्वारा भाषण देना भाषा का मौखिक रूप है।

ख. छात्र स्वयं करें।

ग. 1. मौखिक **2.** लिखित

3. लिखित **4.** मौखिक

घ. 1. मौखिक **2.** लिखित

3. लिखित **4.** मौखिक

5. लिखित **6.** लिखित

2. अध्याय वर्ण तथाा वर्णमाला (Letter and Alphabet)

क. 1. भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं।

2. हिन्दी भाषा में ग्यारह स्वर और तैंतीस व्यंजन हैं।

3. वर्ण दो प्रकार के हैं।

4. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ये संयुक्त व्यंजन हैं।

ख. 2. **नदी**—न् + अ + द् + ई

3. **छाता**—छ् + अ + त् + आ

4. **खरगोश**—ख् + अ + र् + अ + ग् + ओ + श् + अ

5. **केला**—क् + ए + ल् + आ

ग. क्ष — क्षणिक क्षणभंगुर

त्र — त्रिशूल त्रिनेत्र

ज्ञ — ज्ञान ज्ञात

श्र — श्रमिक श्रम

3. अध्याय शब्द और वाक्य (Word and Sentence)

क. 1. वर्णों के सही मेल से शब्द बनता है और शब्दों के मेल से वाक्य बनता है।

2. कटहल।

3. यह एक वाक्य है।

ख. 1. विवाह **2.** सूरज

3. अदरक **4.** शहद

5. मूली

ग. 1. टमाटर (√)

2. लोमड़ी (√)

3. कमल (√)

4. हिरण (√)

5. किताब (√)

घ. 1. पेड़ बहुत घना है।

2. चार बज रहे हैं।

3. पापा जी पूजा कर रहे हैं।

4. बच्चे खेल रहे हैं।

ङ.
- हाथी एक बहुत बड़ा जानवर है।
- मेरा घर बहुत सुंदर है।
- मेरे पास एक बहुत प्यारी गुड़िया है।

4. अध्याय संज्ञा (Noun)

क. 1. (i) मेज, (ii) कुर्सी, (iii) श्यामपट्ट, (iv) चॉक।

2. पेन, पेन्सिल, स्केल, रबर।

3. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. (i) मोमबत्ती, (ii) कुत्ता, (iii) पहाड़, (iv) मटर, (v) जूते।

ग. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

घ.

फलों के नाम	व्यक्तियों के नाम	शहरों के नाम	सब्जियों के नाम	प्राणियों के नाम
आम	मोहन	जयपुर	आलू	ऊँट
केला	श्याम	जोधपुर	बैंगन	शेर
संतरा	राम	आगरा	करेला	चीता
सेब	सोमेश	दिल्ली		गीदड़
पपीता		भरतपुर		हाथी

ङ. (i) मछली (ii) छतरी
(iii) कबूतर (iv) सूरज
(v) हाथी (vi) कमल
(vii) जहाज (viii) तरबूज

च. (i) आगरा जयपुर
(ii) आम अनार
(iii) आलू बैंगन
(iv) शेर हाथी
(v) तोता मोर

5. अध्याय सर्वनाम (Pronoun)

क. 1. अपनों से बड़ों के लिए 'आप, आपने, आपसे, आपको' जैसे सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

2. तुमने, मेरी, वह, कहाँ

3. पास के लिए—यह, इसे, इसका, इसके तथा ये, इन्हें, इनका, इनसे
दूर के लिए- वह, उसे, उसका, उससे तथा वे, उन्हें, उनका, उनसे।

ख. (i) यह, मेरी (ii) मुझे (iii) आप

ग. 1. सपना बड़ी शरारती है। आज वह आम खाना चाहती है।
2. नरेश मेले में गया। उसने आइसक्रीम खाई।
3. गौतम ने दौड़ में हिस्सा लिया। उसने दौड़ जीती।

घ. (i) पार्क में कमल और सोहन हैं। वे खेल रहे हैं।
(ii) चाचा जी नमस्ते, आप अंदर आइए।
(iii) दीपू छत पर खड़ा है। वह आसमान में तारे देख रहा है।

6. अध्याय विशेषण (Adjective)

क. 1. मेरी बुआ जी अच्छी हैं।
2. मेरी कक्षा में बुद्धिमान बच्चे हैं।
3. लीची मीठी होती है।

ख. 1. खट्टे, **2.** सुन्दर,
3. स्वादिष्ट, **4.** घने,
5. होनहार।

ग. सुंदर → लड़की
मीठा → आम
छोटा → घर

घ. (i) कच्चा (ii) सुस्त
(iii) छोटा (iv) चालाक
(v) गरम (vi) परिश्रमी
(vii) हलका (viii) पाँच

ङ. मीठा, काला, धीरे,
पाँच, सुन्दर, भारी,
चुस्त, तीस, सफेद, पतला, आलसी, ऊँचा।

7. अध्याय लिंग (Gender)

क. 1. पुरुष और स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं।
2. लिंग के दो प्रकार हैं—पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।
3. छात्र/छात्रा स्वयं करें।
4. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. (i) नागिन (ii) रानी
(iii) शेरनी (iv) नानी
(v) नौकरानी (vi) मोरनी

ग. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

(घ) **पुल्लिंग**- राजा, चाचा, नाना, भाई, मोर।
स्त्रीलिंग- रानी, चाची, नानी, बहन, मोरनी।

8. अध्याय — वचन (Number)

क. 1. जिन संज्ञा शब्दों से एक या अनेक संख्या का पता चलता है, उन्हें वचन कहते हैं।

2. वचन दो प्रकार के हैं—
(i) एकवचन, (ii) बहुवचन।

3.

एकवचन	**बहुवचन**
श्यामपट्ट	मेजें
अध्यापक	कुर्सियाँ
कक्षा	पंखे
डस्टर	बल्ब
कूड़ादान	छात्र

शेष, छात्र/छात्रा स्वयं लिखें।

ख.

गमले	किताबें
मिठाइयाँ	कुर्सियाँ
घड़ियाँ	पहाड़ियाँ

ग. **1.** लड़कियाँ, **2.** सेब, **3.** कपड़े, **4.** चश्मा।

घ.

एकवचन	**बहुवचन**
मिठाई	झरने
रसगुल्ला	केले
पर्वत	चिड़ियाँ
कविता	कपड़े

ङ. (i) किताब-एकवचन, (ii) घड़ी-एकवचन, (iii) लड़के-बहुवचन (iv) बिल्लियाँ-बहुवचन, (v) कार-एकवचन।

9. अध्याय — क्रिया (Verb)

क. 1. वे शब्द जो काम होने या करने के बारे में बताते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. चलना, खाना, दौड़ना, पढ़ना।

ख. 1. दादी पूजा <u>कर रही है।</u>

2. माली बगीचे में पानी <u>डाल रहा है।</u>

3. माँ खाना <u>बना रही है।</u>

4. रमा <u>खेल रही है।</u>

ग. **1.** पी, **2.** खेल, **3.** बजा, **4.** चला।

घ. **1.** खा, **2.** पढ़, **3.** सो, **4.** खा, **5.** लिख।

ङ. (i) आदमी अखबार पढ़ रहा है।
(ii) औरत सफाई कर रही है।
(iii) लड़की चित्र बना रही है।
(iv) लड़का कम्प्यूटर चला रहा है।

10. अध्याय — विलोम शब्द (Antonyms)

क. 1. चाँद 'रात में' निकलता है।

2. समय पर काम न करना बुरी बात होती है।

3. आइसक्रीम ठंडी होती है।

ख.

(i) हार	(ii) दूर
(iii) दुःख	(iv) साफ
(v) पूरा	(vi) खुशबू
(vii) पराया	(viii) काला

ग. **1.** पीछे, **2.** उत्तर, **3.** ऊपर, **4.** झूठ।

घ. (i) बाएँ
(ii) निर्धन
(iii) कम
(iv) सच
(v) भारी
(vi) पक्का

11. अध्याय — निबंध लेखन (Essay-Writing)

क. 1. दीपावली

भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। उन्हीं में एक सबसे ज्यादा मनाया जाने वाला त्योहार है, दीपावली।

दीपावली दीपों का त्योहार है। बुराई पर अच्छाई की जीत का त्योहार है।

भगवान श्री राम ने रावण वध कर बुराई पर अच्छाई की जीत का निशान छोड़ा और 14 साल का बनवास काट कर वह अपने राज्य अयोध्या आए और वहाँ का राजपाट संभाला। राम जी के लौटने की खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीप जलाकर अयोध्या को रोशन कर दिया। दीपकों की रोशनी से अमावस्या की काली रात भी उजियारी हो गई थी।

दीपावली का त्योहार कार्तिक मास में आता है। यह अमावस्या की रात को मनाया जाता है। दीपावली के बहुत दिन पहले से मिठाई, पटाखे और फुलझड़ियों की दुकानें सजने लगती हैं। लोग अपने घरों की साफ–सफाई करते हैं। दीपावली से पहले धनतेरस और उसके बाद छोटी दीपावली मनायी जाती है। तीसरे दिन मुख्य त्योहार मनाया जाता है। उसके बाद भाई दूज फिर गोवर्धन त्योहार मनाया जाता है। दीपावली की रात माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। बच्चे और बड़े मिलकर पटाखे और फुलझड़ियाँ जलाते हैं। अपने मित्र, रिश्तेदार और पड़ोसियों को दीपावली की शुभकामनाएँ देते हैं और मिठाई खिलाते हैं।

2. निबंध लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें—

(i) विचारों को एक क्रम से लिखें।

(ii) सरल, शुद्ध और स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें।

ख. मेरे कुत्ते का नाम टॉमी है। वह बहुत ही वफादार है। इसका रंग काला तथा आयु लगभग दो वर्ष है। वह मेरे साथ सैर करने जाता है। वह मेरे साथ खेलता भी है। टॉमी हमारे घर की रखवाली भी करता है। मैं उसे खाने को दूध ा–रोटी तथा अंडा देती हूँ। मैं टॉमी को बहुत प्यार करती हूँ।

ग. (i) छात्र/छात्रा स्वयं करें।

(ii) छात्र/छात्रा स्वयं करें।

12. अध्याय — कहानी लेखन (Story-Writing)

क. 1. खजूर और सीढ़ियाँ

सिकंदपुर गाँव में खजूर के कई पेड़ लगे हुए थे और वे बहुत ऊँचे–ऊँचे थे। उन पर खजूर लगे थे। पर उन पेड़ों पर कोई भी गाँववासी न चढ़ पाता। एक दिन तेज आँधी आई। कई खजूर जमीन पर गिर गए। गाँववालों ने जब खजूर खाए तो उन्हें वे बहुत स्वादिष्ट लगे। गाँव के प्रधान बसेसर ने कहा, ''इस बार खजूर बहुत मीठे और स्वादिष्ट लगे हैं। हमें ये खजूर राजा को भेंट करने चाहिए।'' सबने बसेसर की बात का समर्थन किया। बसेसर, गोकुल और विशन ने एक टोकरे में खजूर रखे और राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजा को भेंट देते हुए कहा, ''महाराज! इस बार हमारे गाँव में बहुत अच्छे खजूर लगे हैं। कृपया इन्हें स्वीकार करें।''

राजा रमन दत्त बहुत दयालु और प्रजा का ध्यान रखने वाला था। उसने बसेसर के हाथ से एक खजूर लेकर खाया। खजूर बहुत ही स्वादिष्ट था। राजा ने बसेसर को धन्यवाद दिया।

बसेसर और उसके साथी गाँव लौट आए। उनके मुख से सारा हाल सुनकर गाँववासी बहुत प्रसन्न हुए। एक दिन राजा रमन दत्त सिंकदपुर पहुँचा। उसने भेष बदला हुआ था। राजा इतने स्वादिष्ट खजूरों के पेड़ देखने आया था। गाँव पहुँचकर उसे ऊँचे–ऊँचें पेड़ों से खजूर तोड़ने की समस्या का पता चला। वह चुपचाप लौट आया। उसने तत्काल दस लम्बी सीढ़ियाँ बेलगाड़ियों में लादकर गाँव की पंचायत के लिए भेज दीं। उसने गाँववासियों के लिए उपहार भी भेजे। अब सिकंदपुर गाँववासियों के लिए खजूर तोड़ने की समस्या हल हो गई थी।

शिक्षा—अच्छे कार्यों का परिणाम अच्छा होता है।

ख. किसी जंगल में दो मित्र कछुआ और खरगोश रहते थे। खरगोश को अपनी तेज दौड़ पर बहुत घमंड था। एक दिन उसने कछुए से उसके साथ दौड़ की प्रतियोगिता करने को कहा। उसने कहा जो भी सबसे पहले जंगल के उस पार वाले बरगद के पेड़ तक पहुँचेगा वह ही विजेता होगा। अगले दिन दौड़ शुरू हुई । खरगोश तेज गति से दौड़ा और बहुत जल्दी कछुए से बहुत आगे निकल गया। वहीं कछुआ बहुत आराम से और धीमी गति से चल रहा था। तेज दौड़ते–दौड़ते खरगोश बहुत थक चुका था। उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसे कछुआ कहीं भी दिखाई नहीं दिया। उसने सोचा कि क्यों न कछुए के यहाँ तक पहुँचने तक थोड़ा आराम कर लूँ और जब कछुआ यहाँ तक पहुँचेगा, मैं फिर से तेज दौड़कर बरगद के पेड़ तक पहुँच जाऊँगा। ऐसा सोचकर खरगोश वहीं पेड़ की छाँव में बैठा गया और सो गया। कछुआ धीमी गति से निरन्तर चलता हुआ उसी जगह तक पहुँच गया जहाँ

खरगोश सोया हुआ था। किन्तु वह रुका नहीं और निरन्तर चलता रहा और खरगोश से पहले बरगद के पेड़ तक पहुँच गया। खरगोश जब जागा तो बहुत देर हो चुकी थी। कछुआ दौड़ प्रतियोगिता जीत चुका था। और खरगोश अपनी भूल पर पछता रहा था।

शिक्षा—घमंडी का सिर सदैव नीचा होता है।

ग. एक कौआ बहुत प्यासा था। वह पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। लेकिन उसे कहीं भी पानी नहीं मिला। तभी उस कौए की नजर एक मटके पर पड़ी। वह उड़ता हुआ उसके पास पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि मटके की तली में बहुत थोड़ा-सा पानी था। कौए ने बहुत प्रयत्न किया, किन्तु वह पानी तक नहीं पहुँच पाया। वह इधर-उधर देखने लगा। उसने मटके पास कुछ कंकड पड़े देखे। उसके मस्तिष्क में एक उपाय आया। उसने अपनी चोंच में कंकड उठाया और मटके में डाला। एक-एक करके उसने बहुत सारे कंकड़ मटके में डाले। धीरे-धीरे पानी ऊपर आने लगा। अंत में कौए की मेहनत सफल हुई और पानी मटके के मुँह तक आ गया। कौए ने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई और उड़ गया।

शिक्षा—परिश्रम करने वालों की हार नहीं होती। अथवा बुद्धि से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

●

हिन्दी व्याकरण–2

1. अध्याय भाषा (Language)

क. **1.** हमारी पाठ्यपुस्तक भाषा का लिखित रूप है।
2. वह भाषा का मौखिक रूप है।

ख. (i) मौखिक, (ii) लिखित रूप, (iii) मौखिक रूप।

ग. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

घ. **1.** मौखिक (√)
2. मौखिक (√)
3. लिखित (√)
4. लिखित (√)

2. अध्याय वर्ण तथा वर्णमाला (Letter and Alphabet)

क. **1.** भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है ?
2. वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
3. हिन्दी भाषा में ग्यारह स्वर और तैंतीस व्यंजन होते हैं।

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन— क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व,
श ष, स, ह

ख.

क	[ख]	ग	[घ]	[ङ]
[च]	[छ]	ज	[झ]	[ञ]
[ट]	ठ	[ड]	ढ	ण
त	[थ]	[द]	ध	[न]

ग. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

स्वर	**व्यंजन**
अ, आ	क, ख, ग, च, घ
इ, ई	ट, ठ
उ, ऊ, ऋ	त, थ
ए, ऐ	प, फ, भ
ओ, औ	र, ल
	ष, स, ह

3. अध्याय संज्ञा (Noun)

क. **1.** प्राणी, वस्तु, स्थान और मन के भावों को संज्ञा कहते हैं।
2. छात्र/छात्रा स्वयं करें।
3. गुलाब, चमेली, गेंदा, गुड़हल, सूरजमुखी

ख. **1.** महात्मा गाँधी, **2.** जवाहर लाल नेहरू, **3.** डॉ. भीमराव अम्बेडकर, **4.** भगतसिंह, **5.** डॉ. अब्दुल कलाम।

ग. **1.** ताजमहल **2.** लाल किला
3. कुतुबमीनार **4.** इमामबाड़ा
5. जामा मस्जिद

घ. **1.** छवि, **2.** गंगा, **3.** बंदर, **4.** बच्चे, **5.** बगीचे।

ङ. **1.** जनवरी **2.** फरवरी
3. मार्च **4.** अप्रैल
5. मई **6.** जून
7. जुलाई **8.** अगस्त
9. सितम्बर **10.** अक्टूबर
11. नवम्बर **12.** दिसम्बर

च. **1.** रविवार, **2.** सोमवार, **3.** मंगलवार, **4.** बुधवार, **5.** गुरुवार, **6.** शुक्रवार, **7.** शनिवार।

छ.

व्यक्ति का नाम	पंडित जवाहरलाल नेहरू
पक्षी का नाम	कोयल
नदी का नाम	सरस्वती
फल का नाम	आम
फूल का नाम	गुलाब

4. अध्याय — सर्वनाम (Pronoun)

क. **1.** संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

2. नजदीक के लिए हम यह, इसे इसका, ये इन्हें, इनका आदि सर्वनाम का प्रयोग करते हैं।

3. हम अपने अध्यापक को 'आप' कहकर संबोधित करते हैं।

ख. **1.** हमारा, **2.** मेरी, **3.** मैं, **4.** यह, **5.** हम

ग. मैं, वह, हमारा, उसका, तुम्हारा, आपका, यह।

5. अध्याय — विशेषण (Adjective)

क. **1.** वे शब्द जो संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

2. सेब का स्वाद 'मीठा' होता है।

3. बहादुर

ख. **1.** दो, **2.** स्वच्छ, **3.** स्वादिष्ट, **4.** काला।

ग. **1.** हरी, **2.** भारतीय, **3.** दो किलो, **4.** बहुत अच्छे, **5.** बहुत सुन्दर।

घ.
मीठा → सेब
खट्टा → अचार
कड़वा → करेला
एक → किताब

ङ. (i) सुन्दर (ii) दो
(iii) खट्टी (iv) तीन
(v) लाल (vi) मीठा

6. अध्याय — लिंग (Gender)

क. **1.** शब्दों के जिस रूप से उनके पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता चले, वे लिंग कहलाते हैं।

2. बैल, भैंसा (पुल्लिंग), गाय भैंस (स्त्रीलिंग)।

3. मोर, कोयल (पुल्लिंग) मोरनी, मादा कोयल (स्त्रीलिंग)।

ख. (i) स्त्रीलिंग (ii) पुल्लिग
(iii) पुल्लिग (iv) पुल्लिग
(v) पुल्लिग (vi) स्त्रीलिंग
(vii) स्त्रीलिंग (viii) पुल्लिग
(ix) स्त्रीलिंग (x) स्त्रीलिंग

ग. (i) पुत्री (ii) हथिनी
(iii) अध्यापिका (iv) मालिन
(v) देवी (vi) गाय
(vii) ऊँटनी (viii) गायिका

घ. (i) गाय → बैल (ii) राजा → रानी
(iii) बंदर → बँदरिया (iv) लड़का → लड़की

7. अध्याय — वचन (Number)

क. **1.** बहुवचन।

2. एकवचन।

3. पाठशालाएँ।

ख. **1.** घड़ियाँ, **2.** गाय, **3.** घोड़े, **4.** कपड़े।

ग. (i) नारियाँ (ii) लड़कियाँ
(iii) ताले (iv) पाठशालाएँ
(v) घड़ियाँ (vi) कन्याएँ
(vii) फौजें (viii) साड़ियाँ

घ. (i) बहुवचन (ii) एकवचन
(iii) एकवचन (iv) एकवचन
(v) बहुवचन (vi) एकवचन
(vii) बहुवचन (viii) बहुवचन

8. अध्याय — क्रिया (Verb)

क. **1.** छात्र/छात्रा स्वयं करें।
2. छात्र/छात्रा स्वयं करें।
3. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. **1.** तैरती **2.** दौड़ता
3. टहल **4.** जाती
5. बनाती **6.** खा
7. देख।

ग. (i) देख (ii) उड़ा
(iii) पी (iv) चर

घ. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

9. अध्याय — विलोम शब्द (Antonyms)

क. **1.** निर्धन
2. खट्टा
3. बड़ा

ख.

दिन	रात
उचित	अनुचित
आदि	अंत
आशा	निराशा
मान	अपमान
अगला	पिछला

ग. (i) अन्याय (ii) लघु
(iii) हानि (iv) पतला
(v) अनादर (vi) अंत
(vii) रोना (viii) शत्रु
(ix) निर्धन (x) अशिक्षित
(xi) पुण्य (xii) गरीब
(xiii) शाम (xiv) रात

घ. (i) पतला (ii) अपमान
(iii) शाम (iv) शिष्य
(v) अशिक्षित (vi) गुलाम
(vii) पुण्य

10. अध्याय — पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

क. **1.** वायु—हवा, समीर, पवन, अनिल।
2. आकाश के।
3. भगवान, प्रभु।

ख.

मार्ग	–	पथ, रास्ता
बगीचा	–	उद्यान, उपवन
पुत्री	–	सुता, बेटी
जल	–	पानी, नीर
कमल	–	पंकज, सरोज

ग.

गणेश	→	गणपति
मेघ	→	बादल
पुत्र	→	बेटा
जल	→	पानी

घ. (i) फूल—पुष्प (ii) नदी—सरिता
(iii) हाथ—कर (iv) पहाड़—पर्वत
(v) सूरज—रवि (vi) माता—जननी

11. अध्याय — अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

क. **1.** चित्रकार। **2.** जिसके पास धन न हो।
3. अनपढ़।

ख. (i) मेहनती (ii) सैनिक
(iii) डाकिया (iv) धोबी

ग.

जो साथ पढ़ता हो—	सहपाठी
जो डॉक्टर की मदद करती है—	नर्स
जो खेत में काम करता है—	किसान
जो चित्र बनाता है—	चित्रकार

12. अध्याय — कहानी लेखन (Story-Writing)

क. 1. किसान के चार बेटे थे।

2. कुत्ते ने अपनी परछाईं देखी।

3. किसान ने अपने बेटों को शिक्षा दी—एकता में बल है।

ख. लालची किसान

किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह खेती करके अपने परिवार का पेट पालता और समय से राजा का सारा कर ईमानदारी से चुकाता था। वह बहुत गरीब था किन्तु बहुत ईमानदार भी था। वह राजा की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। राजा उसकी ईमानदारी और सेवाभाव से बहुत प्रसन्न था। राजा ने उसकी सेवा से खुश होकर उस किसान को एक सोने का अंडा देने वाली मुर्गी उपहार में दी। किसान उस मुर्गी को लेकर अपने घर आ गया। वह मुर्गी प्रतिदिन एक सोने का अंडा देती थी। किसान उन अंडों को बेचकर अपनी जरूरतें पूरी करने लगा। धीरे-धीरे उस किसान के मन में लालच आ गया। उसने सोचा इस मुर्गी के पेट में बहुत सारे सोने के अंडे हैं, क्यों न मैं इसका पेट चीरकर सारे अंडे एक ही बार में निकाल लूँ। ऐसा सोचकर उस किसान ने लालच में आकर उस मुर्गी का पेट चीर दिया। ऐसा करते ही वह मुर्गी मर गई और उस किसान को उसके पेट में कुछ भी नहीं मिला। साथ ही उसे जो एक सोने का अंडा रोज मिलता था वह उससे भी हाथ धो बैठा और सिर पर हाथ रखकर रोने लगा।

शिक्षा—लालच का परिणाम बुरा होता है।

ग. बंदर और मगरमच्छ

किसी नदी के किनारे जामुन का एक पेड़ था। उस पेड़ पर एक बंदर रहता था। वह रोज उस पेड़ से मीठे जामुन तोड़कर खाता था। उसी नदी में एक मगरमच्छ भी रहता था। बंदर कुछ जामुन उस मगरमच्छ को भी खाने के लिए देता था। धीरे-धीरे बंदर और मगरमच्छ में मित्रता हो गई। अब तो वह बंदर उस मगरमच्छ को प्रतिदिन जामुन खिलाता था। एक दिन वह मगरमच्छ कुछ जामुन अपनी पत्नी के लिए भी ले गया। उन मीठे जामुनों को खाकर उसकी पत्नी ने उससे कहा, ''यह जामुन तो बहुत मीठे हैं। वह बंदर इन जामुनों को रोज खाता है उसका कलेजा भी बहुत मीठा होगा। मुझे उस बंदर का कलेजा खाना है। वह मगरमच्छ से उस बंदर का कलेजा खाने की जिद करती है। तब वह मगरमच्छ बंदर के पास जाकर उससे कहता है कि उसकी पत्नी उससे मिलना चाहती है और अपनी बातों में फँसाकर उस बंदर को अपनी पीठ पर बैठाकर नदी के बीचों-बीच पहुँच जाता है। वहाँ पहुँचकर वह उससे बोला, ''मित्र! तुम्हें सत्य बताऊँ, मेरी पत्नी का मानना है कि तुम प्रतिदिन इतने मीठे जामुन खाते हो तो तुम्हारा कलेजा भी बहुत मीठा होगा। वह तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है।'' यह सुनकर बंदर के तो प्राण ही सूख गए किन्तु उसने धैर्य और बुद्धि से काम लिया। उसने मगरमच्छ से कहा, '' अरे मित्र! बस इतनी सी बात थी। यह बात तुम मुझे पहले ही बता देता तो मैं तुम्हें पेड़ पर से अपना कलेजा उतार कर दे देता। यह बात सुनकर मगरमच्छ चौंक गया और बोला कि तुम पेड़ पर से अपना कलेजा उतारकर कैसे दे सकते ? क्या वह अभी तुम्हारे पास नहीं है। तो बंदर बोला, ''अरे मगरमच्छ भाई! तुम तो जानते हो कि मैं सारे दिन उछल-कूद करता रहता हूँ, इस उछल-कूद में मेरा कलेजा कहीं नदी में न गिर जाए, इसलिए मैं उसे निकाल कर पेड़ पर सुरक्षित रख देता हूँ। तुम मुझे वापस पेड़ पर ले चलो, जिससे मैं वह कलेजा तुम्हें दे दूँ और तुम उसे अपनी पत्नी को खाने के लिए दे सको। बंदर की यह बात सुनकर मगरमच्छ उसे प्रसन्नतापूर्वक वापस लेकर चल दिया। मगरमच्छ जैसे ही किनारे तक पहुँचा बंदर झट से उछलकर पेड़ पर चढ़ गया और मगरमच्छ से बोला, ''अरे मूर्ख! क्या कभी कोई अपना कलेजा निकाल कर भी रख सकता है। धूर्त वो तो मैंने तुझसे अपने प्राण बचाने के लिए झूठ बोला था चला जा यहाँ से, अब कभी मेरे पास नहीं आना। तेरे जैसे धोखेबाज से मुझे मित्रता नहीं रखनी। मूर्ख मगरमच्छ वहाँ से अपना-सा मुँह लेकर चला गया।

शिक्षा—बुद्धि और धैर्य के बल पर बड़ी से बड़ी मुसीबत से भी बचा जा सकता है।

13. अध्याय — निबन्ध लेखन (Essay-Writing)

क. 1. निबंध लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें—

(i) निबंध लिखने से पहले विषय की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(ii) भाषा सरल, स्पष्ट, शुद्ध एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।

(iii) वाक्य छोटे तथा अर्थपूर्ण होने चाहिए।

(iv) विचारों को बार-बार दोहराया न जाए।

(v) विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

2. मुझे दीपावली का त्योहार पंसद है। इस त्योहार से पहले सभी अपने-अपने घरों की सफाई करते हैं। बाजार मिठाइयों, गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियों, खील-बताशे, दीपक आदि से सज जाते हैं।

यह पाँच दिन का त्योहार होता है। सबसे पहले धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन लोग सोने–चाँदी से बनी चीजें आभूषण आदि खरीदते हैं इस दिन बर्तन भी खरीदने का प्रचलन है। अगले दिन छोटी दीपावली मनाई जाती है। इसे यम दीपावली भी कहते हैं। इस दिन माताएँ आटे का दीपक बनाकर घर के बाहर जलाती हैं। तीसरे दिन दीपावाली का मुख्य त्योहार मनाया जाता है। सुबह से ही घर में पकवान बनने लगते हैं। लोग अपने घरों को बिजली के बल्बों से सजाते हैं। शाम होते–होते सभी घर बिजली के बल्बों, दीपकों और मोमबत्तियों से जगमगाने लगते हैं। रात होने पर सभी घरों में माता लक्ष्मी और भगवान गणेश का पूजन होता है। उसके बाद सभी एक–दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएँ देते हैं। लोग अपने मित्रों एवं पड़ोसियों को मिठाई खिलाकर दीपावली की शुभकामनाएँ देते हैं। बच्चे पटाखे और फुलझड़ियाँ जलाते हैं। अगले दिन भाई दूज का त्योहार होता है। बहनें अपने भाई को टीका करती हैं। उन्हें मिठाई खिलाती हैं और उनके लिए मंगल कामनाएँ करती हैं। भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं। सबसे अंत में गोवर्धन की पूजा होती है लोग अपने–अपने घरों में गोबर से भगवान गोवर्धन के प्रतीक स्वरूप बनाते हैं और खील, खीर, मेवे, आदि से उनकी पूजा करते हैं और परिक्रमा लगाते हैं। इस प्रकार यह पाँच दिन का त्योहार सम्पन्न होता है।

3. (i) स्वतंत्रता–दिवस प्रतिवर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है।

(ii) यह हमारा राष्ट्रीय पर्व है।

(iii) इस दिन हमारे देश को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिली थी।

(iv) स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए बहुत से लोगों ने अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

(v) इस दिन प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडा फहराते हैं और देशवासियों को एक रहने का संदेश देते हैं।

ख. मेरा जन्मदिन

मेरा जन्मदिन.............................को होता है। इस वर्ष मेरे माता–पिता ने मेरा जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया।

सुबह हम सब मंदिर गए। वहाँ मैंने प्रसाद बाँटा । फिर मैं पिताजी के साथ विद्यालय गया। वहाँ मेरी अध्यापिका ने मुझे बहुत स्नेह दिया और सभी मित्रों ने खड़े होकर मुझे बधाई दी। पिताजी मेरे सभी मित्रों के लिए उपहार लाए थे।

शाम को हमने पूरा घर गुब्बारों और रंगीन झालरों से सजाया। हमारे सभी संबंधी और मेरे सभी मित्र मेरे जन्मदिन की दावत पर आए। मैंने केक काटा और खूब पकवान खाए।

माँ ने बच्चों के लिए जादू के कार्यक्रम और कई खेल आयोजित किए थे। सबने खूब मस्ती की और माँ को धन्यवाद दिया। मेरे इस जन्मदिन पर मुझे अधिक आनंद आया। मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा।

रिक्त स्थान में छात्र अपना नाम लिखकर अपने जन्मदिन के बारे में निबंध लिख सकते हैं।

2. मेरी प्रिय पुस्तक

मेरे पास बहुत–सी पुस्तकें हैं, पर उन सभी में से मुझे पंचतंत्र सबसे अधिक प्रिय है। इस पुस्तक में लेखक ने छोटी–छोटी मनोरंजक कथाओं के माध्यम से साम–दाम–दंड–भेद आदि राजनीति, विज्ञान, ज्ञान, नैतिक मानदण्डों का ज्ञान कराने का सफल प्रयास किया है। पशु–पक्षियों को पात्र बनाकर नैतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान को लोगों तक पहुँचाया है। इस पुस्तक की कहानियों को पढ़ने और सुनने का कुछ अलग ही आनंद है। इसे पढ़ने वाला स्वयं को उन कहानियों का एक पात्र अनुभव करने लगता है। इस पुस्तक का अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। मानव चरित्र, स्वभाव और कर्त्तव्य का चित्रण जंतु पात्रों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जाना इस पुस्तक की विशेषता है।

3. गाय

गाय बहुत ही उपयोगी जानवर है। यह हमें दूध देती है। गाय का दूध पूर्ण व पौष्टिक भोजन के रूप में जाना जाता है। गाय एक घरेलू और धार्मिक जानवर है। भारत में गाय की पूजा हिन्दू धर्म में एक रिवाज है। हिन्दू धर्म में इसे 'माता' का स्थान प्राप्त है।

गाय का शरीर बड़ा होता है। इसके चार पैर होते हैं। इसकी एक लंबी पूँछ होती है। इसके दो सींग होते हैं। इसके दो कान, दो आँखें और एक बड़ी नाक, मुँह और सिर होता है। यह देश के लगभग हर क्षेत्र में पायी जाती है। यह हरी घास, अनाज और अन्य चीजें खाती है। इसके गोबर से उपले बनाए जाते हैं जो ईंधन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इसके मूत्र का उपयोग दवा बनाने में किया जाता है। इसके बछड़े खेत जोतने के काम आते हैं। गाय एक बहुत ही सीधा जानवर है।

14. अध्याय चित्र वर्णन (Picture-Descriptopn)

क. 1. आज मेरे छोटे भाई का जन्मदिन है। घर में सुबह से ही प्रसन्नता का माहौल है। घर में पकवान बनाए जा रहे हैं। शाम होते ही घर में मेहमानों का आना शुरू हो गया। सभी ने मेरे छोटे भाई को जन्मदिन की बधाई भी दी और आशीर्वाद भी दिये। इसके कुछ मित्र भी आए हुए हैं। वह इनके साथ प्रफुल्लित है। माताजी और पिताजी जन्मदिन की दावत की व्यवस्था कर रहे हैं। रात को आठ बजे मेरे भाई ने अपना केक काटा और सभी ने उसे ढेर सारी बधाइयाँ और उपहार दिए। उसके बाद सभी ने केक और दावत का आनन्द लिया। पिताजी ने सभी को उपहार देकर विदा किया। इस प्रकार हम सभी ने छोटे भाई के जन्मदिन पर खूब मजे किए।

2. (i) मेरे विद्यालय का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष 15 दिसम्बर को मनाया जाता है।

(ii) इस दिन मेरे विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

(iii) सर्वप्रथम प्रधानाध्यापिका दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ करती हैं। उपप्रधानाध्यापिका विद्यालय की वर्षभर की उपलब्धियाँ सभी को बताती है।

(iv) सभी बच्चे, अभिभावक व अतिथि ध्यानपूर्वक सुनते हैं और होने वाले कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं।

(v) अंत में प्रतियोगिता में सफल विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाता है।

ख. (i) यह होली का दृश्य है। सभी बच्चे होली खेल रहे हैं।

(ii) एक लड़की-लड़के को रंग लगाकर भाग रही है।

(iii) एक लड़का पिचकारी से अपने मित्र पर रंग डाल रहा है।

(iv) गुलाल और रंग रखे हुए हैं ।

(v) सभी बहुत आनन्द के साथ होली खेल रहे हैं।

1. अध्याय भाषा, लिपि एवं व्याकरण (Language, Script and Grammar)

क. 1. भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं।

2. भाषा के दो रूप होते हैं—लिखित एवं मौखिक।

3. मौखिक रूप।

4. लिखित रूप।

5. हिन्दी।

6. हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है।

7. बोली गई ध्वनियों को जिन चिह्नों के द्वारा प्रकट किया जाता है वह लिपि कहलाती है—(1) देव नागरी, (2) रोमन।

8. भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र 'व्याकरण' कहलाता है।

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति—

1. दो, **2.** गुरुमुखी, **3.** मौखिक, **4.** लिखित, **5.** व्याकरण।

ग. सही-गलत

1. (√) , **2.** (√), **3.** (×), **4.** (×), **5.** (√)

घ.

कर्नाटक	कन्नड़
केरल	मलयालम
गुजरात	गुजराती
महाराष्ट्र	मराठी
उड़ीसा	उड़िया
पंजाब	पंजाबी

ङ. सही विकल्प पर चिह्न (√) लगाइए—

1. (ब) दो (√), **2.** (स) मौखिक (√), **3.** (ब) देवनागरी (√), **4.** (ब) देवनागरी (√), **5.** (स) व्याकरण से (√)

च. (i) देवनागरी, (ii) फारसी, (iii) रोमन, (iv) बंगाली, (v) गुरुमुखी।

2. अध्याय वर्ण (Letter and Alphabet)

क. 1. भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर, व्यंजन।

3. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

4. अनुस्वार—अंगूर, संगत।
अनुनासिक—साँप, आँख।

5. संयुक्त व्यंजन—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, द।

6. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. 1. संयुक्त व्यंजन, **2.** चंद्रबिन्दु, **3.** चवालीस, **4.** तैंतीस, **5.** वर्णमाला।

ग. सही-गलत

1. (×) , **2.** (√), **3.** (√), **4.** (×)

घ. बंदर = ब् + अं + द् + अ + र् + अ
पाठशाला = प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ
गुड़िया = ग् + उ + ड़ + इ + य् + आ

ङ. (i) सेब, (ii) बच्चा, (iii) केला, (iv) मेला।

च. 1. (ब) त्र (√), **2.** (स) अनुनासिक (√), **3.** (अ) ग्यारह (√)

3. अध्याय मात्राएँ, शब्द तथा वाक्य (Symbols of Vowels, Word and Sentense)

क. 1. व्यंजन के साथ स्वर का जो चिह्न लगता है, वह मात्रा कहलाती है।

2. वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं।

3. शब्दों के सही क्रम को ही वाक्य कहते हैं।

4. "मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।"

ख. 1. (√) , **2.** (×), **3.** (√), **4.** (×)

ग. (i) सेवक, सेवा (ii) काला, कागज (iii) दूब, दूसरा (iv) रुकना, रुक्मिणी

घ. (i) मछुआरा (ii) गिलास (iii) अलमारी (iv) खरगोश।

ङ. **1.** हमें सदा सच बोलना चाहिए।
2. मैं रोज विद्यालय जाता हूँ।
3. रविवार के दिन छुट्टी होती है।

च. **1.** (स) ऋ (√) **2.** (ब) उल्लू (√)
3. (स) ई (√)

4. अध्याय संज्ञा (Noun)

क. 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, द्रव्य तथा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, लड़की, हाथी।
2. हाथी, मोर, साँप, गिलहरी, बंदर।
3. छात्र/छात्रा स्वयं करें।
4. बचपन, मानवता, दया, प्यार, घृणा ।
5. मीठा।

ख. 1. श्वेता, **2.** वृक्ष, **3.** आगरा,
4. कार, **5.** कमल।

ग. 1. **महात्मा गांधी** एक महापुरुष थे।
2. यह कहानियों की **पुस्तक** मेरी है।
3. मेरे चाचा जी **ऑस्ट्रेलिया** में रहते हैं।
4. हमारा राष्ट्रीय पक्षी **मोर** है।
5. **अर्चना** मधुर गीत गाती है।

घ.

1.	सीता,	मोहन,	राम
2.	मेज,	पुस्तक,	बोतल
3.	आगरा,	इलाहाबाद,	दिल्ली
4.	आलू,	गोभी,	मटर
5.	कमल,	गुलाब,	चमेली

5. अध्याय सर्वनाम (Pronoun)

क. 1. संज्ञा शब्दों के स्थान पर जिन शब्दों का उपयोग किया जाता है वे सर्वनाम कहलाते हैं।
2. भाषा को सुन्दर और स्पष्ट बनाने के लिए हम सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं।
3. सर्वनाम शब्द-आप, मैं, तुम।
4. अपने से बड़ों के लिए हम 'आप' सर्वनाम शब्द का प्रयोग करते हैं।

ख. 1. आप **2.** कौन **3.** मैं **4.** वह।

ग. 1. (√), **2.** (√), **3.** (×), **4.** (√), **5.** (√)

घ. 1. उन्हें—उन्हें अपना काम करना चाहिए।
2. कौन—दरवाजे पर कौन खड़ा है?
3. आप—आप दिल्ली कब जा रहे हैं ?
4. मुझे—मुझे विद्यालय जाना है।
5. तुम—तुम इधर आओ।

ङ. (i) मैं (ii) वे
(iii) वह, किसे, (iv) उनको, मेरा
(v) उसे, हम, (vi) तुम

6. अध्याय विशेषण (Adjective)

क 1. संज्ञा शब्द के बारे में अधिक जानकारी देने वाले या विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।
2. छात्र/छात्रा स्वयं करें।
3. अचार खट्टा होता है।
4. इमली खट्टी होती है।

ख. 1. घना **2.** अमीर **3.** सुन्दर **4.** वह।

ग. 1. (√), **2.** (√), **3.** (×), **4.** (√), **5.** (√)

घ. (i) **गरीब**—मोहन गरीब लड़का है।
(ii) **ईमानदार**—रमेश एक ईमानदार व्यक्ति है।
(iii) **समझदार**—गीता एक समझदार लड़की है।
(iv) **कड़वा**—करेला कड़वा होता है।
(v) **अच्छा**—हमें अच्छा व्यक्ति बनने की कोशिश करनी चाहिए।
(vi) **सुन्दर**—कविता एक सुन्दर लड़की है।
(vii) **पतला**—राम एक पतला - दुबला लड़का है।

7. अध्याय लिंग (Gender)

क. **1.** स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।

2. लिंग के दो भेद होते हैं– (i) स्त्रीलिंग, (ii) पुल्लिंग

3. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

4. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

5. मुर्गी।

ख. **1.** पुरुष, **2.** मामी, **3.** अध्यापिका, **4.** माली।

ग. **1.** (√), **2.** (×), **3.** (√), **4.** (×)

घ. (i) घोड़ा (ii) गुड्डा
(iii) धोबी (iv) मोर

ङ. (i) मुर्गी (ii) पत्नी
(ii) नौकरानी (iv) गुड़िया
(v) मालिन (vi) पड़ोसिन

8. अध्याय वचन (Number)

क. **1.** घड़ी

2. पौधे

3. वचन के दो भेद होते हैं—एकवचन, बहुवचन।

4. संज्ञा के जिस रूप से हमें संख्या का ज्ञान होता है, उसे वचन कहते हैं।

ख. **1.** बच्चे, **2.** सेब, **3.** मछली, **4.** सब्जियाँ।

ग. **1.** (√), **2.** (×), **3.** (√), **4.** (×)

घ. (i) लता – लताएँ
(ii) पाठशाला – पाठशालाएँ
(iii) मेला – मेले
(iv) घोड़ा – घोड़े
(v) बच्चा – बच्चे
(vi) दीवार – दीवारें

9. अध्याय क्रिया (Verb)

क. **1.** जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं।

2. (i) राम जाता है।
(ii) हाथी गन्ने खा रहा है।
(iii) मोहन किताब पढ़ रहा है।
(iv) हवा चल रही है।
(v) वह विद्यालय जाता है।

3. छात्र/छात्रा स्वयं करे।

4. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

5. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. **1.** गा, **2.** पढ़, **3.** लिख, **4.** नाच, **5.** तैर।

ग. छात्र/छात्रा स्वयं करें ।

घ. (i) मुस्कुराना।
(ii) खेलना।
(iii) चमकना।
(iv) पढ़ना।

ङ. **1.** मोहन चाकू से फल काट रहा है।

2. राम गाँव जा रहा है।

3. लड़की रस्सी कूद रही है।

4. बच्चा रो रहा है।

5. सीता किताब पढ़ रही है।

10. अध्याय विलोम शब्द (Antonyms)

क. **1.** वे शब्द जो एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

2. धर्म-अधर्म।

3. चोट लगने पर हम रोते हैं।

4. करेला कड़वा होता है।

5. सूरज पश्चिम दिशा में छिपता है।

ख. **1.** विपरीत, **2.** अँधेरा **3.** विलोम, **4.** मधुर, **5.** असत्य।

ग.

सुलभ	दुर्लभ
हल्का	भारी
आदर	अनादर
अल्प	अधिक
सुर	असुर
धर्म	अधर्म
थल	जल
प्रदान	आदान

घ. **1.** कड़वा, **2.** अस्त, **3.** छोटा, **4.** जवाब, **5.** चढ़ाव।

ङ. (i) अधिक—कम (ii) धीर—अधीर
(iii) जल—थल (iv) सुर—असुर
(v) चतुर—मूर्ख (vi) जीवन—मरण
(vii) आदर—अनादर (viii) मजबूत—कमजोर
(ix) शुद्ध—अशुद्ध (x) कोमल—कठोर

11. अध्याय पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

क. **1.** वे शब्द जो समान अर्थ का बोध कराते हैं, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2. हवा—पवन, समीर, अनिल
आग—अग्नि, अनल, ज्वाला
3. अतिथि—मेहमान, आगन्तुक

ख. **1.** पक्षी, **2.** आसमान, **3.** पर्यायवाची।

ग. आकाश—गगन साँप—सर्प
शेर—सिंह फूल—पुष्प
रात—रात्रि मित्र—सखा

12. अध्याय अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitute)

क. **1.** वाक्य तथा वाक्यांशों को छोटा तथा प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. पुजारी।
3. शहरी।
4. जो महीने में एक बार हो।
5. दर्जी।

ख. **1.** नाई, **2.** वर्ष, **3.** वाक्य, वाक्यांशों।

ग. **1.** विदेशी, **2.** दर्जी, **3.** असंभव, **4.** मूर्तिकार, **5.** धनी, **6.** मासिक।

घ. **1.** जो जंगल में रहता हो — जंगली
2. जो खेत में काम करता हो — खेतीहर/किसान
3. जो बाल काटता हो — नाई
4. जो मंदिर में पूजा करता हो — पुजारी
5. जो शहर में रहता हो — शहरी

13. अध्याय अशुद्धि संशोधन (Error Improvement)

क. **1.** शब्द की सही वर्तनी को उसके सही उच्चारण के द्वारा पहचाना जाता है।
2. कृष्ण।
3. मैंने मीठा आम खाया।

ख. **1.** मोहन कुर्सी पर बैठा है।
2. मेरे दो भाई हैं।
3. यह कपड़े की दुकान है।
4. मुझे खाना खाना है।
5. हमने खीर खाई।

ग. (i) दूध (ii) कृषक
(iii) त्योहार (iv) परीक्षा
(v) विद्यार्थी (vi) उदाहरण

14. अध्याय — मुहावरे (Idioms)

क. 1. विशेष अर्थ का बोध कराने वाले शब्द-समूह या कथन को मुहावरा कहते हैं।

2. भाषा को सुंदर और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

3. अँगूठा दिखाना—समय पर काम न आना।
कान भरना—पीठ पीछे शिकायत करना।

4. आँखों का तारा होना।

ख. 1. गुस्सा, **2.** मुहावरे, **3.** सुंदर, प्रभावशाली

ग. 1. नौ दो ग्यारह होना।

2. भीगी बिल्ली बनना।

3. आसमान सिर पर उठाना।

4. आँखों का तारा होना।

15. अध्याय — पत्र-लेखन (Letter-Writing)

क. सेवा में,
प्रधानाचार्य जी
सी. ए. एम. पब्लिक स्कूल,
बहादुरगढ़-125407

विषय—बहन की शादी में जाने हेतु पाँच दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरी बड़ी बहन की शादी 15 अक्टूबर को है। मैं अपनी बहन की शादी के समस्त कार्यक्रम में सम्मिलित होना चाहता हूँ। अत: आपसे प्रार्थना है कि मुझे पाँच दिनों का अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!
आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुजय

ख. ए-51/3, राजीव नगर,
जोधपुर।
दिनांक: 12 अक्टूबर, 20.........

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप विवाह जैसे अनमोल बंधन में बंध चुके हैं। आपको एवं मेरी प्यारी भाभी माँ को मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ। ईश्वर से नवदंपती के लिए बहुत सारी प्रार्थनाएँ। ईश्वर करे भाभी के आगमन से आपके व हमारे पूरे परिवार के जीवन में और खुशियाँ भरें।

आप सभी बड़ों को मेरा चरण-स्पर्श
आपका भाई
सुरेश

16. अध्याय — निबन्ध-लेखन (Essay-Writing)

क. 1. किसी विषय पर अपने विचारों तथा भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने को निबंध-लेखन कहते हैं।

2. निबंध लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें—

(i) निबंध लिखने से पूर्व विषय की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
(ii) निबंध में लिखे गए वाक्य छोटे हों।
(iii) निबंध की भाषा सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।
(iv) विराम-चिह्नों का उचित उपयोग करना चाहिए।
(v) एक ही बात को बार-बार न दोहराया गया हो।

(ख) 1. हमारा राष्ट्र-ध्वज

प्रत्येक देश का अपना राष्ट्रीय ध्वज होता है जो उस देश के गौरव और सम्मान का प्रतीक होता है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है, जो देश की स्वतंत्रता के बाद से हमारे राष्ट्रीय भवनों पर फहरा रहा है। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले पर पहली बार ध्वजारोहण किया था। हमारी पराधीनता का प्रतीक यूनियन जैक उस दिन उतार दिया गया था। तब से आज तक राष्ट्र की आन-बान और शान का प्रतीक तिरंगा फहरा रहा है।

हमारा राष्ट्र ध्वज केसरिया, सफेद और हरे रंगों से बना है। इसके बीच में सफेद पट्टी पर अशोक चक्र है। इस चक्र में चौबीस तीलियाँ हैं और इसका रंग गहरा नीला है। तिरंगे के तीन रंग अपने विशेष गुणों के प्रतीक हैं। केसरिया रंग उत्साह और वीरता का परिचायक है, सफेद रंग हमारी पवित्रता, उज्ज्वल चारित्रिकता, सत्य और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतीक है। हरा रंग हमारे वैभव और संपन्नता का परिचायक है। लहलहाती हरी-भरी फसलों का रंग ही तो झलकता है इस हरे रंग में आज यह हमारी बहुमुखी प्रगति का भी प्रतीक बन चुका है। ध्वज के मध्य में बना अशोक चक्र हमारी

धार्मिक स्वतत्रंता का प्रतीक है। उसकी चौबीस तीलियाँ हमारे विभिन्न धर्मों और उनकी समन्वित सांस्कृतिक एकता तथा सर्वधर्म समभाव का परिचायक है।

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर यहाँ ध्वज फहराया जाता है। स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री जी द्वारा तथा गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति जी द्वारा इसे फहराया जाता है।

दोनों ही अवसरों पर इसे इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है और सेना की टुकड़ियाँ इसका अभिवादन करती हैं। देश के राज्यों में मुख्यमंत्रियों अथवा राज्यपालों द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है।

स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगे के अनन्तकाल तक फहराते रहने की कामना की जाती है। हमें इस ध्वज की आन-बान शान को बनाए रखने के लिए प्राणों की भी परवाह नहीं करनी चाहिए।

2. रक्षाबंधन

रक्षाबंधन प्रमुख हिन्दू त्योहारों में से एक है। यह भाई-बहन के रिश्तों को और भी ज्यादा मजबूत करने के लिए मनाया जाता है। इस दिन बहन द्वारा भाई की कलाई पर एक पवित्र धागा यानी राखी बाँधी जाती है और उनके अच्छे स्वास्थ्य और लम्बे जीवन की कामना की जाती है। वहीं दूसरी तरफ भाइयों द्वारा अपनी बहनों को हर हाल में रक्षा करने का संकल्प लिया जाता है।

भाई-बहन का रिश्ता बहुत खास होता है। भाई अपनी बहनों की सुरक्षा के लिए सदैव तैयार रहते हैं। भाई बहन के इसी प्रेम के कारण यह विशेष पर्व मनाया जाता है। रक्षाबंधन का त्योहार हर भाई-बहिन के लिए बहुत खास होता है।

रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी कलाई पर राखी बाँधती है। उन्हें मिठाई खिलाती है और भाइयों के लिए मंगलकामना करती है। अंत में भाइयों के द्वारा अपनी बहनों को उपहार भेंट किये जाते हैं और उनकी रक्षा का प्रण लिया जाता है।

राखी का भाईयों और बहनों के लिए एक खास महत्व है। यह मानवीय भावों का, प्रेम, त्याग और कर्त्तव्य का बंधन है।

17. अध्याय — कहानी लेखन (Story-Writing)

क. कहानी की भाषा सरल एवं रोचक होनी चाहिए।

ख. किसी जंगल में एक चींटी और एक टिड्डा रहते थे। चींटी बहुत मेहनती थी परन्तु टिड्डा बहुत आलसी था। वह पूरे दिन सोता तथा उछल-कूद करता रहता था। चींटी बरसात के दिनों के लिए कड़ी मेहनत करके अन्न इकट्ठा करती, परंतु टिड्डा कुछ काम नहीं करता था। चींटी उसे अन्न इकट्ठा करने को कहती तो वह बहाना बना देता। उसने बरसात के दिनों के लिए अन्न का एक भी दाना इकट्ठा नहीं किया।

बरसात का मौसम आ गया। कई दिनों से लगातार बारिश हो रही थी। चींटी के पास अपने परिवार के लिए खाने-पीने की पूरी व्यवस्था थी, परन्तु टिड्डे के पास कुछ न था। जब कई दिनों तक बारिश नहीं रुकी तो टिड्डा भीगता हुआ चींटी के पास आया और बोला—''बहन चींटी! मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ, मुझे कुछ अन्न दे दो। मैं वर्षा रुकने पर तुम्हें वापिस कर दूँगा।'' टिड्डे की यह बात सुनकर चींटी को क्रोध आ गया, वह क्रोध से बोली—मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया पर तुमने कुछ नहीं किया। अब तुम भूखे मरो, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती। चींटी की यह बात सुनकर टिड्डा अपना-सा मुँह लेकर बारिश में भीगता हुआ अपने घर वापिस चला गया।

शिक्षा—सुखी रहने के लिए परिश्रम करना जरूरी है।

18. अध्याय — अपठित गद्यांश (Unseen Passage)

1. (1) हमारे राष्ट्रध्वज का नाम तिरंगा है।

(2) इसमें तीन रंग हैं।

(3) अशोक चक्र में 24 तीलियाँ (लकीरें) हैं।

2. (1) अमन एक अनुशासन प्रिय बालक है।

(2) अमन ने बताया कि वह एक बुजुर्ग व्यक्ति की सड़क पार करने में सहायता कर रहा था।

(3) शिक्षिका ने कक्षा में छात्रों से कहा कि हमें बड़ों का आदर करना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

1. अध्याय भाषा (Language)

क. 1. भाषा दो व्यक्तियों के मध्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करने का माध्यम है।

2. ध्वनियों को लिखने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहते हैं।

3. भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।

4. सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को बोली कहते हैं।

ख. 1. लिपि, **2.** मौखिक, लिखित तथा सांकेतिक। **3.** भाषाएँ, **4.** व्याकरण।

ग. 1. (×), **2.** (×), **3.** (√)

घ.

उर्दू	फारसी
अंग्रेजी	रोमन
बाँग्ला	बंगाली
गुजराती	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी

ङ. सही विकल्प पर चिह्न (√) लगाइए—

1. गुजरात (√) **2.** पंजाबी (√)

2. अध्याय वर्ण, वर्णमाला और मात्राएँ (Letter, Alphabet and Symbols of Vowels)

क. 1. वर्ण भाषा की वह सबसे छोटी इकाई है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

2. वर्ण के भेद (i) स्वर, (ii) व्यंजन

3. वर्णमाला में 44 वर्ण हैं।

4. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. 1. (√), **2.** (×), **3.** (√)

ग. दीवार — द् + ई + व् + आ + र् + अ

मोर — म् + ओ + र् + अ

चिड़िया — च् + इ + ड़ + इ + य् + आ

घ. 1. वर्ण (√), **2.** तैंतीस (√), **3.** वर्णमाला (√)

3. अध्याय शब्द और वाक्य (Word and Sentence)

क. 1. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

2. सार्थक शब्दों के क्रमबद्ध समूह वाक्य कहलाते हैं।

3. गुलाब, बगुला।

4. छतरी।

ख. 1. (×), **2.** (×), **3.** (√), **4.** (√)

ग. 1. पुस्तक, **2.** औरत, **3.** लड्डू, **4.** सूरज, **5.** कढ़ाई, **6.** हाथी।

घ. (1) मेरी मम्मी स्वादिष्ट खाना बनाती है।

(2) मैं अपना काम खुद करता हूँ।

(3) राहुल ईमानदार लड़का है।

(4) हम सब चिड़ियाघर गए थे।

(5) कृष्ण और सुदामा बहुत अच्छे मित्र थे।

ङ. 1. वाक्य (√), 2. वर्णों के (√), 3. वर्ण (√)

4. अध्याय संज्ञा (Noun)

क. 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

2. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—

(i) व्यक्तिवाचक, (ii) जातिवाचक, (iii) भाववाचक।

उदाहरण—

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा—विराट कोहली अच्छा खिलाड़ी है।

(ii) जातिवाचक संज्ञा—कबूतर उड़ रहे हैं।

(iii) भाववाचक संज्ञा—मोहन सभी से ईर्ष्या करता है।

3. जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति के गुण, दशा या व्यापार का पता चलता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

4. व्यक्तिवाचक संज्ञा

5. भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना जातिवाचक संज्ञा सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से ही होती है।

6. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. **1.** जंगल, **2.** दिल्ली, **3.** मित्र, **4.** दयालबाग, **5.** खिलाड़ी।

ग. **1.** (√), **2.** (×), **3.** (×), **4.** (√)

घ. **1.** मानवता, **2.** चलाई, **3.** मनुष्यता, **4.** होशियारी, **5.** मित्रता, **6.** पीलापन।

ङ.

	संज्ञा शब्द	**भेद**
1.	दीपावली	व्यक्तिवाचक संज्ञा
2.	हरियाली	भाववाचक संज्ञा
3.	अतुल	व्यक्तिवाचक संज्ञा
4.	लड़के	जातिवाचक संज्ञा
5.	ताजमहल	व्यक्तिवाचक संज्ञा

5. अध्याय — सर्वनाम (Pronoun)

क. **1.** संज्ञा शब्द के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

2. ऐसे सर्वनाम शब्द जो वाक्य में आने वाले दूसरे संज्ञा व सर्वनाम शब्दों से संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।

3. संज्ञा के स्थान पर हम सर्वनाम प्रयोग करते हैं।

4. 'आप' सर्वनाम शब्द का प्रयोग करते हैं।

ख. **1.** वैसा, **2.** ये, **3.** कौन

ग. **1.** (√), **2.** (√), **3.** (√)

घ. **1.** मैं—मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।

2. आप—आप सुबह टहलने जाते हैं।

3. तुम—तुम गाँव कब जा रहे हो ?

4. हम—आज हम सभी फुटबॉल खेलने जाएँगे।

ङ. **1.** कौन— प्रश्नवाचक सर्वनाम।

2. हम— पुरूषवाचक सर्वनाम।

3. अपना, स्वयं— निजवाचक सर्वनाम।

4. यह— निश्चयवाचक सर्वनाम।

6. अध्याय — विशेषण (Adjective)

क. **1.** संज्ञा शब्द की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

2. विशेषण के चार भेद हैं—

(i) गुणवाचक विशेषण—ऋषभ ने पीली कमीज पहनी है।

(ii) संख्यावाचक विशेषण—हमारी मम्मी ने बुआ को एक साड़ी उपहार में दी।

(iii) परिमाणवाचक विशेषण—पापा ने पाँच मीटर कपड़ा खरीदा।

(iv) सार्वनामिक विशेषण—ये पुस्तकें अत्यन्त रोचक हैं।

3. विशेषण— शब्द संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं। जबकि जिन संज्ञा शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेषण करते हैं।

4. जिस शब्द से किसी वस्तु इत्यादि के परिमाण या माप-तोल का पता चले उसे परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं। **उदाहरण**—मोहित ने आठ लीटर दूध फैला दिया।

5. मीठा, तेज, फुर्तीला।

ख. **1.** बेईमान, **2.** लाल, **3.** तीन, **4.** तिरंगे।

ग. **1.** (×), **2.** (√), **3.** (√)

घ.

विशेषण	—	**विशेष्य**
काला	—	हाथी
नीला	—	आकाश
सुन्दर	—	औरतें
रंगीन	—	तितलियाँ
ऊँची	—	इमारत

ङ.

विशाल	—	हाथी
हरा	—	पालक
छोटा	—	बच्चा
घमासान	—	युद्ध
पाँच	—	आम
सुगंधित	—	फूल
वीर	—	सैनिक

7. अध्याय क्रिया (Verb)

क. 1. जिन शब्दों से किसी कार्य या घटना के होने का पता चलता है, वे क्रिया कहलाते हैं। जैसे–जाना, उठना, बैठना, पढ़ना।

2. क्रिया के दो भेद हैं–
(i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया।

ख. रिक्त स्थान– 1. भागा, **2.** दहाड़ ।

ग. 1. सकर्मक क्रिया (√), **2.** अकर्मक क्रिया (√)

घ. (i) सोना, (ii) नहाना, (iii) रोना।

8. अध्याय लिंग (Gender)

क. 1. संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के स्त्री-पुरुष जाति का होना पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

2. लिंग दो प्रकार के होते हैं–
(i) स्त्रीलिंग–सीता, लड़की,
(ii) पुल्लिंग–कवि, गायक।

3. उदाहरण–(i) गायिका, (ii) लेखिका, (iii) बहन, (iv) औरत।

4. (i) पहाड़–पुल्लिंग, (ii) झील–स्त्रीलिंग

5. उदाहरण–(i) गायक, (ii) लेखक, (iii) भाईं, (iv) आदमी।

6. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख. 1. (√), **2.** (√), **3.** (×), **4.** (×)

ग.

गाय–बैल	गायिका–गायक
नानी–नाना	दादी–दादा
सेठानी–सेठ	छात्रा–छात्र

घ. 1. भाई **2.** दादी
3. धोबिन **4.** बालिकाओं
5. लड़कियाँ

9. अध्याय वचन (Number)

क. 1. संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो प्रकार हैं–
(i) एकवचन, (ii) बहुवचन।

2. एक ही वस्तु का बोध कराने वाले शब्द एकवचन कहलाते हैं—लड़का जबकि एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द बहुवचन कहलाते हैं–लड़के।

3. अनेक।

4. बहुवचन– पेड़, पत्ते लगे हैं।

5. बहुवचन।

ख. 1. खिलौने **2.** चॉकलेट
3. मिठाइयाँ **4.** बच्चों
5. पुस्तकों

ग. 1. (×), **2.** (√), **3.** (√), **4.** (√)

घ.

एकवचन	**बहुवचन**
दवाई	दवाइयाँ
मिठाई	मिठाइयाँ
वस्तु	वस्तुएँ
औरत	औरतें
जलेबी	जलेबियाँ

ङ.

एकवचन	**बहुवचन**
गुड़िया	चादरें
मुर्गा	सहेलियाँ
बोतल	नदियाँ
नानी	केले

10. अध्याय पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

क. 1. एक ही शब्द के समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. कमल – पंकज, नीरज, सरोज

3. दुश्मन – शत्रु, बैरी

4. नदी – तटिनी, सरिता

पुत्र – बेटा, सुत

5. पक्षी – खग, नभचर, विहग

ख. सही मिलान

औरत – नारी

पक्षी – खग

लड़की – सुता

जल – पानी

सूर्य – सूरज

मित्र – सखा

ग. 1. नीर, **2.** सदन, **3.** जलधि, **4.** जलज, **5.** नभ।

घ. मित्र – सखा

रात – रात्रि

पवन – हवा

औरत – नारी

नीरज – कमल

पक्षी – खग

पुस्तक – किताब

पुत्री – बेटी

आकाश – अंबर

पुत्र – बेटा

फूल – कुसुम

घर – सदन

ङ. शब्द **पर्यायवाची शब्द**

पुत्र – बेटा, सुत, लड़का

कमल – पंकज, नीरज, जलज

पृथ्वी – धरा, वसुन्धरा, जमीन

पुत्री – सुता, बेटी, लड़की

सूर्य – सूरज, दिवाकर, दिनकर

11. अध्याय अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitute)

क. 1. कुम्हार।

2. भाषा को सरल, स्पष्ट एवं संक्षिप्त बनाने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

3. अध्यापक।

4. डाकिया।

ख. 1. दर्जी, **2.** असंभव, **3.** धनी, **4.** मूर्तिकार, **5.** वार्षिक।

ग. जो लोहे की वस्तुएँ बनाता हो –लुहार

जो कभी न मरे –अमर

जो खेत में काम करता हो –किसान

जो लकड़ी का काम करे –बढ़ई

जिससे बहुत खतरा हो –खतरनाक

घ. 1. चित्रकार (√), **2.** मिट्टी का (√), **3.** मासिक (√)

12. अध्याय विलोम-शब्द (Antonyms)

क. 1. जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

2. उथला।

ख. (i) गुण – दोष

(ii) आदर – अनादर

(iii) आदि – अन्त

(iv) दिन – रात

(v) गुरु – लघु

(vi) पाप – पुण्य

ग. (i) सुबह – शाम

(ii) मित्र — शत्रु
(iii) कोमल — कठोर
(iv) हानि — लाभ
(v) आजाद — गुलाम।

13. अध्याय विराम–चिह्न (Puntuation-Marks)

क. 1. शब्दों, वाक्यांशों के बीच, वाक्यों के पश्चात् आवश्यकतानुसार कहीं रुकना पड़ता है, इसे प्रकट करने के लिए कुछ चिह्न लगाए जाते हैं अर्थात् लिखते समय भाव और अर्थ की स्पष्टता के लिए प्रयोग किये जाने वाले विशेष चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

2. जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा जाता है वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

3. वाक्य के बीच में जहाँ हम अर्थ स्पष्ट करने के लिए थोड़ा रुकते हैं, वहाँ अल्प विराम लगाया जाता है।

4. विस्मयबोधक चिह्न शोक, हर्ष, विस्मय और घृणा आदि भावों को दर्शाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं

5. वाक्य पूर्ण होने पर पूर्ण विराम लगाया जाता है।

ख. प्रश्नवाचक चिह्न (?) अल्प विराम (,)
विस्मयबोधक चिह्न (!) पूर्ण विराम चिह्न (।)

ग. 1. विस्मयबोधक, **2.** पूर्ण,
3. प्रश्नवाचक, **4.** अल्प विराम

घ. 1. गांधी जी ने कहा है—"करो या मरो।"

2. पापा, मम्मी और बहन मेला देखने गए।

3. वह पढ़ता तो नहीं था, न जाने कैसे पास हो गया?

4. लालबहादुर शास्त्री जी का नारा था—''जय जवान जय किसान''।

5. 14 नवम्बर को बाल-दिवस किसकी याद में मनाया जाता है?

6. क्या हमारा विद्यालय साफ-सुथरा है ?

7. वाह! तुम्हारी सफलता तो प्रशंसनीय है।

14. अध्याय अशुद्धि संशोधन (Error-Improvement)

क. 1. वर्तनी के नियमों को ध्यान में रखकर शुद्ध शब्द लिखने चाहिए।

2. (i) गलत उच्चारण का प्रयोग।
(ii) गलत मात्रा का प्रयोग।

3. मैंने स्वादिष्ट मीठा आम खाया।

4. व्याकरणिक नियमों के माध्यम से हम वाक्य की अशुद्धि को पहचान सकते हैं।

ख. (i) संतरा, (ii) स्कूल, (iii) प्राणी।

ग. (i) त्योहार, (ii) परीक्षा
(iii) विद्यार्थी (iv) उदाहरण
(v) कृपया (vi) कवि

घ. 1. आशीर्वाद (√)

2. लकड़ी (√)।

15. अध्याय मुहावरे (Idioms)

क. 1. मुहावरे सामान्य वाक्य को विशेष और असाधारण वाक्य में बदल देते हैं।

2. हाथ बँटाना।

3. ऑखो में धूल झोंखना।

ख. 1. पेट में चूहे कूदना

2. नौ-दो ग्यारह होना

3. नाक में दम करना

ग. 1. छक्के-छुड़ाना = हरा देना

2. मुँह में पानी आना = जी ललचना

3. हाथ बँटाना = सहायता करना

4. नानी याद आना = बहुत परेशान होना

5. फूला ना समाना = बहुत प्रसन्न होना

घ. (i) कंधे से कंधा मिलाना— **अर्थ**—पूरा साथ देना।
वाक्य—आजकल पुरूषों के साथ महिलाएँ भी कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहती है।

(ii) अंधे की लाठी— **अर्थ**—एकमात्र सहारा
वाक्य—श्रवण अपने माता-पिता की अंधे की लाठी थे।

16. अध्याय पत्र-लेखन (Letter-Writing)

क. 1. एक अच्छे पत्र के लिए उसकी भाषा का सरल, सुबोध व स्पष्ट होना आवश्यक है, साथ ही पत्र की लिखावट का भी साफ होना जरूरी है।

2. डाकिया को परेशानी से बचाने के लिए पत्र पर पत्र पहुँचने का पता स्पष्ट शब्दों में होना चाहिए।

3. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
राणा प्रताप सर्किल, जयपुर
दिनांक 11 अगस्त, 20........
विषय—पुस्तकालय से पाठ्यपुस्तक पाने के लिए प्रार्थना-पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा चार का छात्र हूँ। मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो पाने के कारण बाजार से पाठ्य-पुस्तक खरीदने में असमर्थ हूँ। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे विद्यालय के पुस्तकालय से पाठ्य-पुस्तक प्रदान कराने की कृपा करें जिससे मैं बिना किसी बाधा के अपना अध्ययन कर सकूँ। सत्र की समाप्ति पर मैं सभी पुस्तकें पुस्तकालय में जमा करवा दूँगा। आपकी इस कृपा के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद!
आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुजय

4. ए-51/3, राजीव नगर,
जोधपुर

प्रिय सर्वेश,

आशा करता हूँ कि तुम सपरिवार स्वस्थ एवं मस्त होगे। मित्र कुछ दिन पश्चात् ही दीपावली का त्योहार आ रहा है, जिसे हम दीपों का उत्सव भी कहते हैं। इस त्योहार के शुभ अवसर पर सर्वप्रथम मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। यह त्योहार तुम्हारे जीवन को भी जगमग दीपों की तरह उज्ज्वल कर दे। ढेर सारी शुभकामनाओं एवं प्यार के साथ तुम्हें एवं तुम्हारे पूरे परिवार को मेरे व मेरे परिवार की ओर से शुभ दीपावली।

तुम्हारा मित्र
मनोज

17. अध्याय निबंध-लेखन (Essay-Writing)

1. निबंध लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें—
(i) सबसे पहले निबंध की रूपरेखा बना लें।
(ii) निबंध की भाषा सरल व स्पष्ट हो।
(iii) सभी बातें क्रम से लिखें।
(iv) निबंध में शब्दों की सीमा का विशेष ध्यान रखें।
(v) किसी एक बात को बार-बार न दोहराएँ।

2. मेरा विद्यालय

मेरा नाम कविता है। मैं केन्द्रीय विद्यालय, आनन्द विहार में पढ़ती हूँ। यह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है।

* मेरे विद्यालय में लगभग 700 विद्यार्थी पढ़ते हैं। मेरे विद्यालय में प्रत्येक कक्षा के कई विभाग हैं। विद्यालय में लगभग 50 कमरे हैं। सभी कमरे हवादार हैं। मेरा विद्यालय साफ-स्वच्छ तथा सुंदर है।
* मेरे विद्यालय में 60 अध्यापक एक प्रधानाचार्य व दो उप-प्रधानाचार्य हैं। सभी परिश्रमी एवं गुणी हैं।
* विद्यालय में बच्चों के खेलने के लिए एक बहुत बड़ा मैदान है। साथ ही बच्चों के पढ़ने के लिए पुस्तकालय, कम्प्यूटर कक्ष व विज्ञान की प्रयोगशाला भी है।
* मेरे विद्यालय में पढ़ाई बहुत अच्छी होती है। परीक्षाओं के परिणाम उत्तम आते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद पर भी ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता है। इस विद्यालय में पढ़ते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता होती है।

3. गणतंत्र दिवस

* भारत में 'गणतंत्र दिवस' 26 जनवरी को मनाया जाता है। 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश भारत का संविधान लागू हुआ था। यह राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन सभी शैक्षिक संस्थानों एवं कार्यालयों की छुट्टी होती है।
* इस दिन दिल्ली में विशेष परेड का आयोजन होता है। राष्ट्रपति तिरंगा फहराते हैं और सलामी लेते हैं। शहीदों को याद किया जाता है।

* राजपथ पर परेड का भव्य आयोजन होता है। भारतीय सेना अपनी ताकत का प्रदर्शन करती है और सेना के जवान तरह–तरह के कारनामें करते हैं। अनेक झाँकियाँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं।

* स्कूलों एवं कॉलेजों में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–कूद एवं स्वतंत्रता को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की जाती है।

18. अध्याय कहानी–लेखन (Story-Writing)

क. **1.** कहानी सदैव मजेदार और शिक्षा से पूर्ण होनी चाहिए।

2. कहानी लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें—

(i) कहानी हमेशा भूतकाल में लिखें।

(ii) कहानी लिखने से पहले कहानी की रूपरेखा बना लें।

(iii) कहानी की भाषा सरल, रोचक और आकर्षक हो।

(iv) अंत में कहानी से मिलने वाली शिक्षा भी लिखें।

3. चोर की दाढ़ी में तिनका

किसी महानगर में एक धनी और चतुर व्यापारी रहता था। उसके घर में अनेक नौकर थे। एक दिन उस धनी व्यापारी की बेटी के बहुमूल्य आभूषणों का बटुआ गुम हो गया। जो अभी अपने ससुराल से आई हुई थी। इस प्रकार आभूषणों का गुम हो जाना बहुत बड़ी बदनामी की बात थी। व्यापारी बटुआ प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयत्न किए किन्तु चोर का कुछ पता न चला। अंत में उस धनी व्यापारी ने एक युक्ति निकाली। उसने सब नौकरों को बुलाकर एक–एक छड़ी दी और कहा कि ये सब जादुई छड़ियाँ हैं। जो भी चोर होगा, कल तक उसकी छड़ी एक इंच लंबी हो जाएगी। मैं कल सबकी छड़ी नापकर देखूँगा। तुम सब कल अपनी–अपनी छड़ी लेकर इसी समय मेरे सामने हाजिर होना। दूसरे दिन जब मालिक के सामने उपस्थित होने का समय आया तो जिस नौकर ने बटुआ चुराया था, उसने अपनी छड़ी का एक इंच हिस्सा काट दिया था क्योंकि उसे यह डर था कि जादू के प्रभाव से उसकी छड़ी एक इंच बढ़ जाएगी। जब मालिक ने सबकी छड़ी नापी तो उस नौकर की छड़ी एक इंच छोटी थी। इस प्रकार वह चोर पकड़ा गया और उसकी बेटी के सारे गहने मिल गए।

शिक्षा— चोर सदैव सशंकित रहता है।

ख. किसी गाँव में बंगाली नाम का एक लड़का रहता था। वह प्रतिदिन **जंगल** में भेड़–बकरियाँ **चराने** जाता था। एक दिन जब वह जंगल में अपनी भेड़–बकरियाँ चरा रहा था, तब उसे एक **शरारत सूझी**। वह एक **वृक्ष** पर चढ़ गया और जोर से **चिल्लाने** लगा '**बचाओ** बचाओ! **भेड़िया** आया! भेड़िया आया! उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर गाँव वाले उसकी **सहायता** करने दौड़े–दौड़े आए। गाँव वालों ने पूछा—कहाँ है भेड़िया? बंगाली ने **मुस्कराते** हुए कहा, भेड़िया तो आया ही नहीं। मैं तो झूठ–मूठ में यों ही मजाक कर रहा था। गाँव वालों ने बंगाली को बहुत **भला-बुरा** कहा और तुरन्त वापिस चले गए।

कुछ दिन बाद जब बंगाली रोजाना की तरह जंगल में अपनी **भेड़-बकरियाँ** चरा रहा था, तब वास्तव में ही भेड़िया आ गया। बंगाली भेड़िए से **भयभीत** होकर जोर–जोर से चिल्लाने लगा—दौड़ो, **दौड़ो बचाओ! बचाओ!** बचाओ! भेड़िया आया। **सचमुच** ही भेड़िया आया! गाँव वालों ने उसकी आवाज तो सुनी, परन्तु उसकी सहायता के लिए **कोई** नहीं आया। उन्होंने सोचा, बंगाली उसी दिन की तरह **झूठ** बोलकर हमें **मूर्ख** बना रहा है। भेड़िए ने बंगाली की आठ–दस भेड़ें **मार** दी और बंगाली को भी घायल कर दिया।

शिक्षा—'हमें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।'

19. अध्याय अपठित गद्यांश (Unseen Passage)

क. **1.** इंदिरा प्रियदर्शिनी।

2. सन् 1962 में।

3. 19 नवम्बर, 1917।

4. 31 अक्टूबर, 1984।

5. राजीव गांधी।

आओ अभ्यास करें

(i) **1.** हमारे राष्ट्रीय झंडे का नाम तिरंगा है।

2. अशोक चक्र निरंतर प्रगतिशीलता का प्रतीक है।

3. हमारे राष्ट्रध्वज में केसरिया, सफेद और हरा तीन रंग हैं।

(ii) केसरिया रंग बलिदान और वीरता का प्रतीक है।

(2) 1. गोल (√)

2. चाँदी-सा चमकीला (√)

3. चाँद (√)।

20. अध्याय — चित्र वर्णन (Picture Description)

क. 1. चित्र को देखकर उसका वर्णन करना अर्थात् चित्र का आशय समझाना।

2. हाँ! चित्र वर्णन से कल्पना-शक्ति बढ़ती है क्योंकि चित्र देखकर हमारे मन में तरह-तरह के विचार आते हैं।

3. छात्र स्वयं प्रयास करें।

ख. बाल गोपाल कृष्ण माखन चुराकर खा रहे हैं। उनके हाथों में माखन की मटकी है। जिसमें से वे माखन निकाल कर खा रहे हैं। माखन से उनका पूरा मुँह सना हुआ है। कुछ माखन मटकी से बाहर फैल रहा है। माखन खाते हुए उनका रूप बहुत मनमोहक लग रहा है। उनके हाथ के बॉसुरी है।

ग. यह चित्र एक रेलवे स्टेशन का है। यहाँ कुछ यात्री गाड़ी के इंतजार में बैठे हुए हैं। एक बालक अखबार बेच रहा है। एक महिला कुली से सामान प्लेटफार्म पर रखने को कहती है। ऐसा लग रहा है माने गाड़ी आने में कुछ समय बाकी है।

घ. आज 15 अगस्त है। सभी अपनी-अपनी पंक्तियों में लगे थे। प्रधानाचार्य ने तिरंगा झंडा फहराया और सभी को अनुशासन में खड़े रहने की सलाह दी। उसके बाद सभी ने राष्ट्रीय गान गाया। सभी विद्यार्थी पोशक में विद्यालय आए थे।

21. अध्याय — अनुच्छेद-लेखन (------)

क. 1. किसी विषय पर अपने विचार संक्षेप में लिखना, अनुच्छेद लेखन कहलाता है।

2. अनुच्छेद लेखन के समय ध्यान रखने योग्य बातें—

(i) भाषा सरल एवं सुग्राह्य होनी चाहिए।

(ii) अनुच्छेद छोटा किन्तु भाव की दृष्टि से पूर्ण होना चाहिए।

(iii) किसी एक विचार पर केन्द्रित होना चाहिए।

ख. 1. पशु-पक्षियों से प्रेम

पशु-पक्षी हमारे दैनिक जीवन के आवश्यक अंग है। हम सुबह पक्षियों के कलरव के साथ जागते हैं। घर में प्रयुक्त होने वाला दूध हमें गाय या भैंस से ही मिलता है। पशु-पक्षी हमारे जीवन के अटूट हिस्से हैं। विधाता ने जब सृष्टि की रचना की तो प्राकृतिक व्यवस्था का पूर्व निर्धारण भी कर दिया। पशु-पक्षी निर्जन वन में जीवन-निर्वाह कर सकते हैं। उन्हें मानव पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। वन में उन्हें पीने के लिए जल और खाने के लिए फल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। जंगली जानवरों को शिकार सुलभ है। मानव स्वार्थवश उन्हें अपने आस-पास रखता है। पशु-पक्षी निरीह होते हैं। स्नेह मिलने पर वे मानव को अपना परम मित्र मानते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उसके सहयोगार्थ प्राण तक न्यौछावर कर देते हैं। विभिन्न पक्षी अपनी मधुर वाणी और सौन्दर्य से हमारा मनोरंजन करते हैं। किन्तु अपने स्वार्थ में मानव इतना अंधा हो जाता है कि वह स्वच्छन्द विचरते पशु-पक्षियों को कैद करता है। उनकी अनदेखी करता है। उनका शिकार करता है। बेचता है। सरकस में उत्पीड़न करके पैसा कमाता है। इसके कारण बहुत से पशु-पक्षियों की कई प्रजातियाँ आज विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ विलुप्त होने के कगार पर हैं। यदि इसी प्रकार पशु-पक्षियों की अनदेखी होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब इस पृथ्वी से इन प्राणियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। इन सब में मानव यह भूल जाता है कि यदि वह इसी प्रकार पशु-पक्षियों के जीवन को नष्ट करता रहा तो उसके स्वयं का जीवन भी शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। अत: उसे पशु-पक्षियों से प्रेम करना चाहिए। उनके प्रति मानवीय संवदेनाओं का प्रयोग करना चाहिए। उनके दाने-पानी का इंतजाम करना चाहिए।

2. मेरी प्रिय पुस्तक

मैंने कई किताबें पढ़ी हैं लेकिन मुझे एक पुस्तक सबसे अधिक पंसद है। यह 'गीता' है। यह हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तक है। इसमें एक बहुत समृद्ध दर्शन है। यह हमें सिखाता है कि मनुष्य को कड़ी मेहनत करनी चाहिए। उन्हें परिणाम के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। भगवान निश्चित रूप से काम के लिए हमें पुरस्कार देता है। अच्छा काम हमेशा अच्छे परिणाम की ओर जाता है। इसके अध्ययन से व्यक्ति कर्म की ओर अग्रसर होता है और उसके परिणाम को ईश्वर पर छोड़ देता है। मुझे इस पुस्तक का यह कर्म दर्शन बहुत ही पंसद है। इस पुस्तक को पढ़ने से मुझे मन की शांति मिलती है।

3. सच्चा मित्र

सच्चा मित्र वही है जो दु:ख और जरूरत में काम आता है। वह मित्र के बहुत छोटे से छोटे कष्ट को भी मेरु पर्वत के समान भारी मान कर उसकी सहायता करता है। मित्र सुख–दु:ख का साथी है। वह केवल दु:ख में ही नहीं सुख में भी खुशियाँ बाँटता है। मित्र के होने से हमारे सुख के क्षण उल्लास से भर जाते हैं। कोई भी खुशी या पार्टी या समारोह मित्रों के शामिल हुए बिना नहीं जमती। सच्चा मित्र हमारे लिए प्रेरणा देने वाला सहायक और मार्गदर्शक बनकर हमें जीवन की सही राह की ओर ले जाने वाला होता है। जब हम निरुत्साहित होते हैं तब वह हमारी हिम्मत बढ़ाता है। जब हम शिथिल होते हैं तब वह प्रेरणा देता है। जब हम विचलित होते हैं तब वह हमारा मार्गदर्शन करता है। सच्चा मित्र हमारे लिए तब शक्तिवर्धक औषधि है जब हम शारीरिक रूप से कमजोरी महसूस करते हैं। सच्चा मित्र हमें पथभ्रष्ट होने से बचाता है और सन्मार्ग की ओर ले जाता है। सचमुच सच्ची मित्रता एक वरदान है जो हर किसी को नहीं मिलती।

●

1. अध्याय भाषा और व्याकरण (Language and Grammar)

क. 1. जिसके माध्यम से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, उसे भाषा कहते हैं।

2. भाषा के तीन रूप होते हैं–
(i) लिखित, (ii) मौखिक, व (iii) सांकेतिक।

3. हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है।

4. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

5. हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है।

6. व्याकरण वह माध्यम है जिसके द्वारा हम भाषा को शुद्ध रूप से बोलना-पढ़ना और लिखना सीखते हैं।

ख. 1. फारसी, **2.** शुद्ध, **3.** बाईस, **4.** भाषा।

ग. 1. व्याकरण हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है। (√)

2. भाषा के चार रूप हैं। (×)

3. पत्र-लिखना भाषा का लिखित रूप है। (√)

4. बोली क्षेत्रीय भाषा होती है। (√)

घ. (i) महाराष्ट्र – मराठी
(ii) तमिलनाडु – तमिल
(iii) केरल – मलयालम
(iv) आंध्र प्रदेश – तेलुगू

ङ. 1. हिन्दी (√)

2. भोजपुरी (√)

2. अध्याय वर्ण विचार (Orthography)

क. 1. भाषा की वह सबसे छोटी इकाई जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते 'वर्ण' कहलाती है। हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं।

2. स्वर के तीन भेद हैं–
(i) ह्रस्व स्वर, (ii) दीर्घ स्वर, व (iii) प्लुत स्वर।

(i) **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं– अ, इ, उ, ऋ।

(ii) **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगे, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहते हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) **प्लतु स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लतु स्वर कहते हैं। इसका चिह्न (३) होता है, जैसे–ओ३म्।

3. संयुक्त व्यंजन– क् + ष् + अ = क्ष = क्षमा।

4. अनुस्वार का उच्चारण नासिका के द्वारा होता है, जैसे– बंदर, जंगल, अंगूर आदि; जबकि अनुनासिक का उच्चारण नासिका और कंठ के द्वारा होता है। जैसे—चाँद, आँख।

ख. 1. संयुक्त, **2.** अधिक, **3.** स्वरों।

ग. औरत–औ + र् + अ + त् + अ।
जंगल–ज् + अं + ग् + अ + ल् + अ।
उच्चारण–उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ।
मुखड़ा–म् + उ + ख् + अ + ड़ + आ।

घ. 1. विसर्ग (√)

2. ओ (√)

3. अध्याय शब्द-विचार (Etymology)

क. 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द कहते हैं। जैसे–राम, किताब, हिमालय।

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं–
(क) तत्सम, (ख) तद्भव, (ग) देशज (घ) विदेशी

3. प्रयोग के आधार पर शब्द के दो प्रकार हैं–
(क) विकारी शब्द, (ख) अविकारी शब्द।

4. रूढ़ शब्द–कल, घर, आँख, पानी
योगिक शब्द– हिमालय, चायवाला।

5. दुग्ध–दूध। घृत–घी।

ख. सार्थक शब्द–गाँव, भेड़िया, इमारत।
निरर्थक शब्द–थीहा, वास्वत, हमल।

ग. हस्त–हाथ, कर्ण–कान

अग्नि—आग, रात्रि—रात

घ. 1. दो (√)

2. ड्राइवर (√)

3. घृत (√)।

4. अध्याय — वाक्य–रचना (Syntax)

क. 1. शब्दों का वह सार्थक समूह जिसका अर्थ स्पष्ट हो 'वाक्य' कहलाता है।

2. वाक्य के दो अंग या भाग होते हैं—उद्देश्य और विधेय।

मुकेश एक ईमानदार बालक है।

उद्देश्य विधेय

3. प्रश्नवाचक वाक्य।

4. विस्मयादिबोधक वाक्य।

5. योजक शब्द—और, जो।

ख. 1. सरल वाक्य, **2.** निषेधवाचक,

3. उद्देश्य, विधेय।

ग.

उद्देश्य	**विधेय**
(i) ऊँट ने	सारा पानी पी लिया।
(ii) कमल	हमारा राष्ट्रीय फूल है।
(iii) मामी ने	स्वादिष्ट खाना बनाया।
(iv) रोहित	कल दिल्ली गया था।
(v) रोहन ने	चाय पी।

घ. (i) प्रश्नवाचक

(ii) इच्छावाचक

(iii) संदेहवाचक

(iv) निषेधवाचक।

5. अध्याय — संज्ञा (Noun)

क. 1. वे शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराते हैं, शब्द 'संज्ञा' कहलाते हैं। संज्ञा के तीन भेद हैं—

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा—श्याम, मोहन, लालकिला।

(ख) जातिवाचक संज्ञा—शेर, बच्चा, पौधा।

(ग) भाववाचक संज्ञा—अहिंसा, प्रेम, ठंड।

2. संज्ञा के भेद—

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा—राम, ताजमहल, गुलाब।

(ख) जातिवाचक संज्ञा—कवि, मित्र, व्यक्ति।

(ग) भाववाचक संज्ञा—बचपन, ममता, मिठास।

3. भाववाचक संज्ञाओं के निर्माण चार प्रकार के शब्दों से होता है, जैसे—जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।

4. संज्ञा शब्द—महात्मा गांधी, पुस्तक, बचपन, बुढ़ापा, जंगल।

5. बचपन—बच्चा से और व्यक्तित्व, व्यक्ति से

6. जातिवाचक संज्ञा—सैनिक, समुदायवाचक संज्ञा-सेना।

7. **<u>द्रव्यवाचक संज्ञा</u>**— जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य, धातु, पदार्थ आदि का बोध कराते हैं, वह 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहलाते हैं; जैसे—कॉफी, चाय, चाँदी, सोना आदि।

<u>समुदायवाचक संज्ञा</u>— जो संज्ञा शब्द किसी समूह, झुंड या समुदाय का बोध कराते हैं, वह 'समुदायवाचक संज्ञा' कहलाते हैं; जैसे—सेना, कक्षा, सभा आदि।

ख. 1. निर्बलता, **2.** चार, **3.** द्रव्यवाचक संज्ञा, **4.** व्यक्तिवाचक संज्ञा।

ग.

1.	आभूषण	—	द्रव्यवाचक संज्ञा
2.	मोहित	—	व्यक्तिवाचक संज्ञा
3.	मिठास	—	भाववाचक संज्ञा
4.	सेब	—	समूहवाचक संज्ञा
5.	लकड़ी	—	जातिवाचक संज्ञा

(घ)

कवि	—	कवित्व
व्यक्ति	—	व्यक्तित्व
मम	—	ममत्व/ममता
मित्र	—	मित्रता

मुस्कुराना	—	मुस्कान	स्व	—	स्वत्व
पराया	—	परायापन	फैलना	—	फैलाव
मीठा	—	मिठास			

6. अध्याय सर्वनाम (Pronoun)

क. 1. वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, 'सर्वनाम' कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के सात भेद हैं—
(i) पुरुषवाचक सर्वनाम,
(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम,
(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम,
(iv) सम्बन्धवाचक सर्वनाम,
(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम,
(vi) निजवाचक सर्वनाम,
(vii) संकेतवाचक सर्वनाम।

3. पुरुषवाचक सर्वनाम—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।

4. कोई—अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

5. (i) आपका शुभ नाम क्या है ?
(ii) श्याम विद्यालय कब जाता है ?

ख. रिक्त स्थान—
1. अपने-आप, **2.** कहाँ,
3. तुम, **4.** अपना।

ग.

	संज्ञा	सर्वनाम
1.	खाना	मैंने,
2.	दाँत	अपने
3.	श्रीनगर	कौन
4.	साड़ी	मेरी

घ. **1.** मुझे, **2.** मैं अपना, **4.** कोई।

ङ. **1.** मैं अपना काम करता हूँ।
2. उसने खाना खाया।
3. दादा जी! आप खाना खाइए।
4. तुम अपना काम करो।

7. अध्याय विशेषण (Adjective)

क. 1. वे शब्द जो संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते है। विशेषण के चार भेद हैं—(i) गुणवाचक विशेषण, (ii) संख्यावाचक विशेषण, (iii) परिमाणवाचक विशेषण और (iv) सार्वनामिक/संकेतवाचक विशेषण।

2. (i) एक लीटर सरसों तेल दीजिए। (निश्चयवाचक सर्वनाम)
(ii) थोड़ा घी दे दीजिए। (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

3. जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की निश्चित संख्या की विशेषता बताए, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे—मेरे पास पाँच नई पुस्तके हैं। दो बड़े हाथी आपस में लड़ रहे हैं।

जबकि जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की अनिश्चित संख्या की विशेषता के बारे में बताए, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—आकाश में कई पतंगें उड़ रही हैं। आज प्रार्थना सभा में कुछ ही बच्चे आए हैं।

4. (i) यह सेब बहुत मीठा है,
(ii) मेरी कलम नीले रंग की है।

5. हमारा घर बहुत हवादार, साफ-स्वच्छ और व्यवस्थित ढंग का बना हुआ है।

ख. 1. वह तारा बहुत चमकीला है।
2. हमारे विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा।
3. इस शहर में सब सुखी हैं।

ग. (i) गुणवाचक विशेषण—
(i) यह नई कलम मेरी है।
(ii) वह पुरानी कलम तुम ले सकते हो।

(ii) निश्चित संख्यावाचक विशेषण—
(i) मेरे पास पहले से पाँच अच्छी कलमें हैं।
(ii) तुम भी दो अच्छी कलमें रख लो।

(iii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—
(i) खेल के मैदान में कई लड़के गेंद खेल रहे हैं।
(ii) पुस्तकालय में बहुत-सी अच्छी कहानियों की किताबें हैं।

8. अध्याय क्रिया (Verb)

क. 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. सकर्मक क्रिया की पहचान—सकर्मक क्रिया की पहचान कर्म से होती है। वाक्य में क्रिया के साथ 'क्या' या 'किसे' लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिलता है तो वह सकर्मक क्रिया है, और यदि उत्तर नहीं मिलता है तो वह अकर्मक क्रिया है।

3. जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म भी होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं जबकि जिन वाक्यों में कर्म का अभाव होता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

4. इस वाक्य में कर्म : अखबार है। और पढ़ना क्रिया है।

ख. 1. फेंक रहा है— समर्क क्रिया

2. उड़ रहे हैं— अकर्मक क्रिया

3. हँसती है — अकर्मक क्रिया

4. उड़ा रहा है — सकर्मक क्रिया

ग. 1. मोहन खाना खाता है।

2. राकेश पत्र लिखता है।

3. मैं मेला देखने जाऊँगा।

4. हवाई जहाज उड़ा ।

घ. 1. जाना — जा

2. बोलना — बोल

3. आना — आ।

3. आना — आ।

4. दो — दो।

9. अध्याय अव्यय (Indeclinable Words)

क. 1. वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन और काल के प्रभाव से कोई परिवर्तन न हो 'अव्यय' कहलाते हैं।

2. अव्यय के पाँच भेद होते हैं—

(i) क्रियाविशेषण, (ii) सम्बन्ध बोधक, (iii) समुच्चय बोधक, (iv) विस्मयादिबोधक, (v) निपात।

3. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

4. जब दो शब्द, दो पदबंध या दो वाक्य आपस में जुड़ते हैं तब वे समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे- श्रीकृष्ण और सुदामा मित्र थे।

ख. 1. धीरे-धीरे — क्रियाविशेषण

2. के बाहर — सम्बन्धबोधक

3. और — समुच्चयबोधक

4. तक — निपात।

10. अध्याय काल (Tense)

क. 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।

2. काल के तीन भेद हैं—

(क) वर्तमान काल—पापा खाना खा रहे हैं।

(ख) भूतकाल—सुभाष ने खाना खा लिया।

(ग) भविष्यत् काल—मैं कल कानपुर जाऊँगा।

3. मोहन गीत गा रहा है।

4. वर्तमान काल चल रहे समय में काम के होने का बोध करता है।

5. उदाहरण—हर्ष फुटबॉल खेल रहा था।

उपर्युक्त वाक्य में 'रहा था' शब्द से बीते हुए समय का पता चल रहा है। अतः यह भूतकाल की क्रिया है।

6. (i) मोहन नृत्य प्रतियोगिता में भाग लेगा।

(ii) मैं कल विद्यालय जाऊँगा।

7. छात्र/छात्रा स्वयं करें।

ख.

	वर्तमान काल	भूत काल	भविष्य काल
1. खा	खाता है	खाया	खाएगा
2. आ	आता है	आया	आएगा
3. लिखता	लिखता है	लिखा	लिखेगा
4. नहा	नहाता है	नहाया	नहाएगा

ग. 1. भविष्यत् काल (√)

2. तीन

3. भूत काल (√)।

11. अध्याय — विराम-चिह्न (Punctuation Marks)

क. **1.** भाषा लेखन के समय प्रयुक्त संकेत चिह्नों को 'विराम चिह्न' कहते हैं।

2. जहाँ वाक्य समाप्त हो जाता है वहाँ 'पूर्ण विराम' लगाया जाता है; जैसे—यह मेरी पुस्तक है।

3. जहाँ वाक्य में प्रश्न पूछा गया हो वहाँ 'प्रश्नवाचक चिह्न' लगाया जाता है; जैसे आप कहाँ जाएँगे ?

4. दोनों ओर के शब्दों को जोड़ने के लिए जो चिह्न लगाया जाता है उसे 'योजक चिह्न' कहते हैं; जैसे—लाभ-हानि।

5. निर्देशक चिह्न का प्रयोग किसी के कथन से पूर्व उदाहरण देने, संवाद लिखने अथवा कवि-लेखक का नाम लिखने से पूर्व आदि स्थान पर किया जाता है। निर्देशक चिह्न योजक चिह्न से बड़ा होता है। जैसे माँ—परिश्रम तुम्हें सफलता की ओर ले जाएगा।

6. (;) को अर्द्ध विराम चिह्न कहा जाता है। वाक्य के मध्य में एक बात पूरी हो जाने पर जहाँ थोड़ा रुकना हो, वहाँ अर्द्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न के संकेत पर पूर्ण विराम से आधी अवधि तक रुका जाता है।

7. वाह! घूमने में मजा आ गया।

8. आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा, दु:ख, प्रेम आदि भावों को प्रकट करने वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

ख. **1.** आप कहाँ से आए हैं ?
2. सुबह उठकर अपने माता-पिता को प्रणाम करो।
3. दीपावली हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है।
4. पूजा, बबली और रेनू सहेलियाँ हैं।
5. वाह! कितना स्वादिष्ट भोजन है।

ग. **1.** अल्प विराम चिह्न
2. पूर्ण विराम चिह्न
3. उद्धरण चिह्न
4. विस्मयादिबोधक चिह्न
5. योजक चिह्न
6. प्रश्नवाचक चिह्न
7. निर्देशक चिह्न
8. लाघव चिह्न
9. कोष्ठक चिह्न
10. अर्द्ध विराम चिह्न

घ. **1.** पूर्ण विराम (√)
2. उद्धरण चिह्न (√)
3. उद्धरण (√)
4. विस्मयादिबोधक (√)
5. प्रश्नवाचक (√)

ङ. सोने का मृग देखकर सीता जी ने कहा, "स्वामी मुझे यही मृग चाहिए। आप मेरे लिए ला दीजिए।" सीता जी की बात सुनकर श्रीराम ने उत्साह भरे स्वर में कहा, "यह मृग लेकर ही लौटूँगा।" लक्ष्मण, यह वन अनेक राक्षसों का घर है। सीता का ध्यान रखना, मैं शीघ्र ही लौटने का प्रयास करूँगा। जब तक मैं न लौट आऊँ, सीता को छोड़कर कहीं मत जाना। लक्ष्मण बोले, "आप चिंता मत कीजिए , मैं पूरा ध्यान रखूँगा।"

12. अध्याय — शब्द-भण्डार (Vocabulary)

क. **1.** आस्तिक।
2. दुष्ट।
3. अर्थ—धन, मतलब।
तीर—नदी का किनारा, बाण।
4. मृदुभाषी।
5. गंगा—देवनदी, सुरसरि।
हिमालय—गिरिराज, नगराज।

ख. **1.** अर्थ,
2. पर्यायवाची,
3. विलोम,
4. श्रुतिसम भिन्नार्थक,
5. विश्वास।

ग. **1.** जंगल — वन, कानन, अरण्य
2. प्रयत्न — कोशिश, प्रयास, यत्न
3. आकाश — अम्बर, गगन, व्योम
4. गंगा — भागीरथी, सुरसरि, देवनदी।
5. अध्यापक — गुरु, आचार्य, शिक्षक।

घ. **सही मिलान—**
महँगा — सस्ता
प्रशंसा — निंदा
गुण — अवगुण
आदान — प्रदान
उपस्थित — अनुपस्थित

ङ.
- **कल**—मेरा मित्र कल मुझसे मिला था।
- शहरों में कल कारखाने खोले जा रहे हैं।
- **लाल**—उसके पास लाल रंग की कार है।
- यशोदा का लाल जग से निराला है।

च. **1.** सूत्र–धागा
सुत्र–पुत्र
2. दीन–गरीब
दिन–दिवस
3. मूल्य–कीमत
मूल–जड़
4. बाघ-पशु
बाग–बगीचा

छ. (i) पुजारी (ii) आज्ञाकारी
(iii) आदरणीय (iv) सर्वज्ञ
(v) मांसाहारी।

13. अध्याय मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverb)

क. **1.** जो वाक्यांश साधारण अर्थ न देकर विशिष्ट अर्थ प्रकट करते हैं, वे मुहावरे कहलाते हैं। जैसे–अँगूठा दिखाना।

2. जब कोई वाक्य स्वतंत्र रूप से प्रयोग होकर अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करता है, तब उसे 'लोकोक्ति' कहते हैं। जैसे–ऊँट के मुँह में जीरा।

3. मूर्ख व्यक्ति को गुणों की पहचान नहीं होती ।

4. अर्थ–बहुत परिश्रम से थोड़ा लाभ।

प्रयोग–अत्यधिक परिश्रम करने के बाद भी राम को ना के बराबर धन प्राप्त हुआ। इसे कहते हैं खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

ख. **1.** **अर्थ**–साफ मना करना।

प्रयोग–आवश्यकता पड़ने पर राकेश ने श्याम को अँगूठा दिखा दिया।

2. **अर्थ**—परेशान करना।

प्रयोग—कक्षा में मोहन ने शिक्षक की नाम में दम कर रखा है।

3. **अर्थ**—टाल-मटोल करना।

प्रयोग—मोहन से यदि किसी कार्य को करने के लिए बोला जाता है तो वह अगर-मगर करने लगता है।

4. **अर्थ**—काम शुरू करना।

प्रयोग—दिव्या ने शुभ मुहूर्त में अपनी दुकान का श्री गणेश कर ही लिया।

ग. **1.** आवश्यकता से बहुत कम मिलना।
2. एक काम से दोहरा लाभ।
3. चीज कम, माँग अधिक।
4. सही न्याय।
5. सब तरफ मुसीबत।

घ. **1.** आग–बबूला होना।
2. नौ दो ग्यारह होना।
3. लार टपकना।
4. हाथ मलना।

14. अध्याय पत्र–लेखन (Letter-Writing)

क. **1.** पत्र दो प्रकार के होते हैं–
(i) औपचारिक पत्र, (ii) अनौपचारिक पत्र।

2. प्रधानाचार्य, पदाधिकारियों, व्यापारियों, ग्राहकों, पुस्तक विक्रेताओं, सम्पादक आदि को लिखे जाने वाले पत्रों को औपचारिक पत्र कहते हैं। औपचारिक पत्र लिखते समय जिसे पत्र लिखा जा रहा है उनके लिए महोदय/महोदया, श्रीमान/श्रीमती, मान्यवर, महाशय जैसे संबोधन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें अभिवादन शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं। पत्र लिखने का कारण पत्र के आरम्भ में ही स्पष्ट करना चाहिए। कम शब्दों में अपनी बात स्पष्ट करनी चाहिए। अंत में आज्ञाकारी, प्रार्थी, भवदीय आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

ख. **प्रधानाचार्या को पानी पीने की उचित व्यवस्था न होने की शिकायत करते हुए पत्र।**

सेवा में,
15 जुलाई, 20........
प्रधानाचार्या
रोजवुड पब्लिक स्कूल
लक्ष्मी नगर,
जैसलमेर

विषय–पानी पीने की उचित व्यवस्था न होने की शिकायत हेतु पत्र।

महोदया,

हमारे विद्यालय में पानी पीने की उचित व्यवस्था नहीं है। उचित व्यवस्था न होने के कारण विद्यार्थी आराम से पानी नहीं पी पाते हैं। धक्का-मुक्की होने के कारण कभी-कभी छात्रों को गिरने से चोट भी लग सकती है। अतः आपसे निवेदन है कि यथाशीघ्र इस समस्या का समाधान करने की कृपा करें।

धन्यवाद
भवदीय
कमलेश

ग. **पिताजी को पढ़ाई का विवरण देते हुए पत्र।**

45, शिव विहार कॉलोनी,
एयरपोर्ट रोड,
जोधपुर।
दिनांक 11.08.20........
आदरणीय पिताजी
सादर चरण स्पर्श
आपका पत्र मिला। आप सभी वहाँ सकुशल हैं यह

जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मैं भी यहाँ पूर्णत: स्वस्थ हूँ। मेरी पढ़ाई यहाँ ठीक प्रकार से चल रही है। मैं नियमित रूप से विद्यालय जाता हूँ और अपने विद्यालय से मिले समस्त कार्य को भी समय से पूरा करता हूँ। साथ ही अतिरिक्त कक्षाओं में भी भाग लेता हूँ। इस बार अर्द्धवार्षिक परीक्षा में मुझे 80% अंक प्राप्त हुए हैं। अंग्रेजी, हिन्दी गणित में 85-80 अंक मिले हैं। आपके आशीर्वाद से वार्षिक परीक्षा में प्रदेश की मेरिट लिस्ट में स्थान अवश्य प्राप्त करूँगा।

मैं पूर्ण मेहनत कर रहा हूँ। खाने का भी विशेष ध्यान रख रहा हूँ। समय मिलने पर खेलता भी हूँ।

पूजनीया माताजी को मेरा सादर प्रणाम।

आपका पुत्र

अखिलेश।

15. अध्याय निबन्ध-लेखन (Essay Writing)

क. 1. बाल-दिवस

प्रत्येक वर्ष 14 नवम्बर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 नवम्बर को विद्यालयों, कॉलेजों के समारोह आदि में जवाहर लाल नेहरू को श्रद्धांजली देकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पमाला भेंट की जाती है। सभी विद्यालयों में बाल दिवस एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

नेहरू जी को छोटे बच्चे बहुत पसंद थे। नेहरू जी को बच्चे चाचा जी कहकर बुलाते थे। नेहरू जी को भी छोटे बच्चों के साथ रहकर खेलना-कूदना बहुत पसंद था। चाचा नेहरू कहते थे कि छोटे बच्चों में उन्हें अपना बचपन नजर आता था। नेहरू जी को छोटे बच्चों में कल के उज्ज्वल भारत की छवि दिखती थी। उनका कहना था कि इन बच्चों पर ही पूरे भारत की कमान है। नेहरू जी एक नयी व जोश भरी सोच के महान नेता थे। नेहरू जी एक राष्ट्रनेता और बड़ी हस्ती थे इसके बावजूद भी बच्चों के साथ खेलना-कूदना उन्हें बहुत पसंद था।

स्कूल को अलग-अलग रंगों, रंगोलियों से गुब्बारों और दूसरे सजावटी वस्तुओं से सजाया जाता है।

बाल दिवस के दिन विद्यालय खुले रहते हैं जिससे बच्चे अपने कार्यक्रम जैसे भाषण, गीत-संगीत, कला, नृत्य, कविता-पाठ आदि करते हैं। बाल दिवस पर अध्यापक भी इन सभी कार्यक्रमों का हिस्सा बनते हैं। इस दिन अनेक प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। इनमें सफल विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

बाल दिवस पर प्रधानमंत्री और बड़े-बड़े नेता आदि बच्चों के लिए नई-नई योजनाओं का आरम्भ भी करते हैं, जिनके माध्यम से उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके। आज के बच्चे ही बड़े होकर फौजी, नेता, पुलिस, इंजीनियर, वकील, डॉक्टर आदि बनते हैं। कल के भारत को यदि सँवारना है तो आज के बच्चों को सही मार्ग दिखाना होगा। उनके भविष्य के साथ हो रहे खिलवाड़ को रोकना होगा। छोटी-सी उम्र में उनसे मजदूरी करवाई जाती है। पढ़ने और खेलने से रोका जाता है। छोटे बच्चे जैसा वातावरण पाते हैं, वैसे ही बन जाते हैं।

बच्चे नाजुक मन के होते हैं और हर छोटी चीज या बात उनके दिमाग पर असर डालती है। उनका आज, देश के आने वाले कल के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इसलिए उनके क्रियाकलापों, उन्हें दिए जाने वाले ज्ञान और संस्कारों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की मानसिक और शारीरिक सेहत का ख्याल रखना भी जरूरी है। बच्चों को सही शिक्षा, पोषण, संस्कार मिले यह देशहित के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं।

2. समाचार-पत्रों का महत्व

समाचार-पत्र बहुत ही शक्तिशाली यंत्र है जो व्यक्ति के आत्मविश्वास और व्यक्तित्व को विकसित करता है। यह लोगों और संसार के बीच वार्ता का सबसे अच्छा साधन है। यह ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। यह अधिक ज्ञान और सूचना प्राप्त करने के साथ ही कुशलता के स्तर को बढ़ाने का सबसे अच्छा स्रोत है। यह सभी क्षेत्रों में बहुत ही कम कीमत पर उपलब्ध है। यह देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होता है।

समाचार-पत्र समाज के लोगों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। सभी लोग देश की सामयिक घटनाओं को जानने में रुचि रखने लगे हैं। समाचार-पत्र सरकार और लोगों के बीच जुड़ाव का सबसे अच्छा माध्यम है। यह लोगों को पूरे संसार की सभी छोटी व बड़ी खबरों का विवरण प्रदान करता है। यह देश के लोगों को नियमों, कानूनों और अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है। समाचार-पत्र विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि ये विशेष रूप से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सामान्य ज्ञान और सामयिक घटनाओं के बारे में बताता है। यह हमें सभी विकासों, नई तकनीकों, शोधों, खगोलीय और मौसम में होने वाले बदलावों, प्राकृतिक वातावरण आदि की सूचना देता है। समाचार-पत्र में सामाजिक

मुद्दों, मानवता, संस्कृति, परम्परा, जीवन-शैली, ध्यान, योग आदि के बारे में बहुत अच्छे लेख भी होते हैं। यह सामान्य जनता के विचारों के बारे में भी सूचना रखता है और बहुत से सामाजिक और आर्थिक विषयों को सुलझाने में मदद करता है। इसके प्रयोग से राजनेताओं, निश्चित सरकारी नीतियों जिसमें दूसरे दलों की भी नीतियाँ शामिल होती हैं, आदि के बारे में जाना जा सकता है। यह नौकरी ढूँढ़ने वालों की, बच्चों के अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाने , व्यापारियों के वर्तमान व्यापारिक गतिविधियों को जानने आदि में मदद करता है।

यदि हम प्रतिदिन नियमित रूप से समाचार-पत्र पढ़ने की आदत बनाते हैं, तो यह हमारी बहुत मदद करता है। यह हम में पढ़ने की आदत विकसित करता है। यह हमारे व्यक्तित्व में सुधार करता है और हमें समाज, राष्ट्र और विश्व से परिचित कराता है, उनसे संबंधित समस्त जानकारियाँ प्रदान करता है। अत: हमें विभिन्न अखबारों को पढ़ना चाहिए और परिवार के अन्य सदस्य व मित्रों को भी समाचार-पत्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

ख. अच्छा स्वास्थ्य

स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का वास होता है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन के समस्त सुखों का आधार है, इसलिए स्वास्थ्य को सबसे बड़ा धन कहा गया है। यदि रुपया पैसा हाथ से निकल जाए तो उसे पुन: प्राप्त किया जा सकता है किन्तु यदि स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो उसे पुरानी स्थिति में लाना कठिन होता है।

जिसका स्वास्थ्य अच्छा होता है उसके मन में उत्साह और उमंग होता है। वह अपना कार्य चिंतामुक्त होकर करता है। वह कठिनाइयों से नहीं घबराता हर समय उत्फुल्ल रहता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान का संतुलित होना भी अति आवश्यक है अच्छा एवं संतुलित आहार नियमित दिनचर्या और नियमित व्यायाम स्वास्थ्य को बनाए रखने के तीन मूलभूत तत्व हैं। भोजन में फल, अनाज, सब्जी और दूध का समन्वय होना चाहिए। फल, हरी, ताजी सब्जियाँ, अंकुरित अनाज तथा दूध की निश्चित मात्रा प्रतिदिन लेने से व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। साथ ही बासी, बाजारू, अधिक तला-भुना और मैदे की अधिक मात्रा वाला भोजन मानव स्वास्थ्य के प्रतिकूल होता है। आजकल बच्चे एवं युवा फास्ट फूड की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। यह आकर्षण असमय ही अनेक प्रकार की बीमारियों एवं मोटापे को आमंत्रित करता है।

योग और ध्यान के, अभ्यास से भी शरीर स्वस्थ रहता है। यह व्यक्ति को तनाव से मुक्त रखता है। प्रात: काल का सैर रक्त के लिए आवश्यक शुद्ध ऑक्सीजन और स्वास्थ्य प्रदान करने वाली होती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम का भी पर्याप्त महत्व होता है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का भी उतना ही महत्व है। मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। अच्छा साहित्य अच्छे विचारों को उत्पन्न करता है। जो व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होता है, वहीं अपने जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति कर पाता है।

16. अध्याय कहानी-लेखन (Story Writing)

1. उपेक्षा की सजा

जीतू नारायणा गाँव में रहता था। वह कक्षा पाँच में पढ़ता था। उसके मामा जी थोड़ी दूर मायापुरी नामक गाँव में रहते थे। मायापुरी के पास एक जंगल था। जीतू को मामा जी के साथ वन में घूमना बहुत अच्छा लगता था। वह मामा जी के लड़के मीतू के साथ खेलता था। दोनों पूरे गाँव में घूमते-फिरते थे।

मई का महीना आया। जीतू की परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी थी। एक दिन मामा जी का पत्र आया। मामा जी ने गर्मियों की छुट्टियों में जीतू को मायापुरी आने के लिए लिखा था। जीतू के पिताजी ने भी 'हाँ' कह दिया। एक दिन पिताजी ने उसे बस में बिठा दिया। बस मायापुरी पहुँची। बस स्टॉप पर मामाजी और मीतू उसे लेने आए थे। वह बहुत खुश था। मामी जी ने उसे प्यार से खाना खिलाया।

दूसरे दिन मामा जी अपने कार्यालय जा रहे थे। उन्होंने जीतू से कहा—" तुम अकेले बाहर कहीं मत जाना। जब भी जाना हो मीतू के साथ बाहर जाना। यहाँ जंगल है। जंगल में बहुत खतरनाक जानवर हैं। और हाँ, दक्षिण दिशा में बिल्कुल मत जाना।" यह कहकर मामाजी कार्यालय चले गए। दोपहर हो गई। मीतू सो रहा था। जीतू बाहर निकला। उसने सोचा — 'दक्षिण दिशा में अवश्य कोई विशेष बात है। आखिर मामा जी वहाँ जाने के लिए मना क्यों कर रहे थे?' वह दक्षिण दिशा की ओर चल दिया।

कुछ दूरी पर एक जगह जमीन नरम थी। उसने एक कदम रखा तो उसका पैर धँस गया। धीरे-धीरे उसका शरीर ज़मीन में धँसता जा रहा था। वहाँ दलदल था, वह दलदल से बाहर निकलने का जितना प्रयत्न करता, उतना ही अंदर धँसता जाता।

उसे बहुत डर लगने लगा। वह बहुत जोर से चिल्लाया। सौभाग्य से पास में ही तीन-चार लोग थे। उनके हाथ में

बाँस था। उन्होंने दलदल में बाँस डाला और धीरे-धीरे जीतू को बाहर निकाल लिया। रात को मामा जी ने उसे बहुत डाँटा' "जब मैंने मना किया था, तो तुम वहाँ क्यों गए थे ?" जीतू ने माफी माँगी और कहा, "मैं आगे से कभी बड़ों की बात की उपेक्षा नहीं करूँगा।"

शिक्षा – हमें सदैव बड़ों की बात सुनकर उस पर अमल करना चाहिए।

2. कुसंगति का फल

एक बार प्रगति नाम की एक लड़की बुरी संगति में फँस गई। वह बात-बात पर लड़ाई-झगड़ा करती, झूठ बोलती, और विद्यालय न जाकर इधर-उधर घूमती रहती। बेटी के इस दुर्व्यवहार से अब उसके माता-पिता बहुत तंग आ चुके थे।

एक दिन प्रगति के पिता जी को एक विशेष उपाय सूझा। वे बाजार से अपनी बेटी के सामने ताज़े फल खरीदकर लाए। उन फलों में एक गला-सड़ा फल भी शामिल था। उन्होंने अपनी बेटी से उन्हें एक टोकरी में रखवा दिया। तीन-चार दिन समाप्त हो जाने पर पिता ने अपनी बेटी से कहा, "ज़रा उन फलों को ले आओ जो तुमने टोकरी में सँभालकर रखे थे।" बेटी तुरंत टोकरी ले आई, लेकिन जैसे ही उसने टोकरी को ढकने वाले ढक्कन को हटाया तो देखा कि सब फल सड़ चुके थे। तब पिता ने बेटी से कहा, " कुछ दिन पहले तो सब फल ताजे थे, एक ही फल सड़ा हुआ था किंतु आज सब सड़ चुके हैं। बेटी! यह सब संगति का फल है। एक सड़े हुए फल के कारण सारे फल सड़ गए। इसी प्रकार बुरी लड़कियों की संगति में रहकर कई अच्छी लड़कियाँ भी बुरी बन जाती हैं। तब से प्रगति ने निश्चय कर लिया कि वह भविष्य में किसी भी बुरी लड़की के संग में नहीं रहेगी और इस प्रकार धीरे-धीरे वह एक अच्छी लड़की बन गई।

शिक्षा – बुरी संगत से अकेला भला।

3. चालाकी का परिणाम

किसी गाँव में धनपत नाम का एक व्यापारी रहता था। वह प्रतिदिन प्रात: अपने गधे पर नमक की बोरियाँ व अन्य सामान लादकर आस-पास के कस्बों में बेचने के लिए जाया करता था। वहाँ तक पहुँचने के लिए उसे कई छोटी-छोटी नदियाँ और नाले पार करने पड़ते थे।

एक दिन नदी पार करते समय अचानक गधे का पैर फिसला और वह नदी में गिर पड़ा। इससे उसकी पीठ पर लदी हुई नमक की बोरियों का नमक पानी में घुल गया। व्यापारी ने किसी तरह अपने गधे को नदी से बाहर निकाला। फिर देखा कहीं गधे को चोट तो नहीं लगी। लेकिन गधा सही सलामत था। पानी में नमक के घुल जाने के कारण गधे का बोझ काफी हल्का हो गया था। बोझ हल्का हो जाने के कारण गधा बहुत ही प्रसन्न हुआ। नमक का व्यापारी गधे को लेकर घर वापस लौट आया क्योंकि उसका सारा नमक तो पानी में बह चुका था, अब वह कस्बों में जाकर करता भी क्या।

गधे को उस दिन बहुत आराम मिला। अब उसने सोचा कि रोज ही ऐसा किया करूँगा। अगले दिन वह व्यापारी फिर गधे पर नमक की बोरियाँ लादकर बेचने निकला। उस दिन फिर नदी पार करते समय गधा जानबूझकर नदी में फिसल गया। उसकी पीठ का बोझ इस बार भी हल्का हो गया। उस दिन भी व्यापारी गधे को लेकर घर वापस लौट आया। रोज-रोज गधे की ऐसी हरकत देखकर व्यापारी उसकी चालाकी समझ गया। इस बार व्यापारी ने गधे की पीठ पर रूई के गट्ठर लाद दिए। यह देखकर गधा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि आज तो पहले ही बोझ कम है। जब मैं पानी में गिरने का नाटक करूँगा तो बोझ कुछ और हल्का हो जायेगा।

यही सोचकर गधा खुशी-खुशी चल पड़ा नदी आते ही वह पानी में गिर गया। लेकिन इस बार उल्टा ही हुआ। व्यापारी ने उसे जल्दी से बाहर नहीं निकाला। परिणाम यह हुआ कि रूई के गठ्ठरों ने काफी पानी सोख लिया और उनका बोझ पहले से कई गुना बढ़ गया।

पानी से बाहर आने में गधे को बहुत परिश्रम करना पड़ा। अब उससे चला भी नहीं जा रहा था। मालिक तो पहले ही जला बैठा था क्योंकि उसे काफी नुकसान हो चुका था। जब गधे से चला नहीं गया तो उसने डंडे से गधे की खूब पिटाई की। उस दिन से गधे ने पानी में गिरने की आदत छोड़ दी।

शिक्षा—कभी-कभी ज्यादा चालाकी भी नुकसानदायक हो जाती है।

ख. किसी जंगल में बरगद का बहुत बड़ा पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत से पक्षी रहते थे। उसी पेड़ पर चिड़ा और चिड़िया रहते थे। कुछ समय बाद एक चील ने आकर उसी पेड़ पर अपना घोंसला बना लिया। कुछ समय बाद चिड़िया ने अपने घोंसले में अंडे दिए। लेकिन चिड़ा और चिड़िया दोनों को चील से बहुत डर लगता था। उन्हें डर था कि चील कहीं उनके अंडे न खा जाए। इसलिए उनमें से एक हमेशा घोंसले में अंडों की देखभाल करने को रहता और दूसरा भोजन की तलाश में बाहर जाता। एक दिन चिड़ा और चिड़िया दोनों साथ ही दाना लेने बाहर चले गए। उसी दिन न जाने कहाँ से एक साँप आकर बरगद के पेड़ पर चढ़ने

लगा। जैसे ही वह साँप रेंगते हुए चिड़िया के घोंसले के पास पहुँचा तब तक चिड़ा और चिड़िया दाना चुगकर वापस आ गए। साँप को अपने घोंसले में रखे हुए अंडों के पास आता देखकर चिड़िया डर से शोर मचाने लगी। चिड़िया के शोर को सुनकर पेड़ पर रह रही चील ने उनके घोंसले की ओर देखा। साँप को चिड़िया के अंडों की ओर बढ़ते देखकर और चिड़िया का रोना सुनकर चील को उन पर दया आ गई। वह अपने घोंसले से उड़कर चिड़िया के घोसले के पास आई और उसने उस साँप को अपने पंजों में दबाकर दूर फेंक दिया। अपने अंडों

को सुरक्षित देखकर उन दोनों चिड़ा–चिड़िया की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने इस उपकार के लिए चील को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

ग. 1. बंदर और राजा

राजा ने बंदर पाला । उस बंदर को राजमहल में कहीं भी आने जाने की अनुमति थी। राजमहल का कोई भी सेवक उसे रोकता–टोकता नहीं था। उसे राजा के गुप्त कक्ष में भी जाने की अनुमति थी। वह राजा के छोटे–मोटे कार्य भी किया करता था। राजा जब सोता था तो बंदर पंखा किया करता था। एक दिन राजा जब सो रहा था और बंदर पंखा कर रहा था उसी समय एक मक्खी आकर राजा की नाक पर बैठ गई। बंदर ने पहले तो मक्खी को उड़ा दिया, लेकिन मक्खी बार–बार आकर राजा की नाक पर बैठ जाती। मक्खी को देखकर बंदर क्रोधित हो गया। इस बार उससे रहा नहीं गया और उसने मक्खी को मारने के लिए राजा की तलवार उठा ली। जैसे ही बंदर मक्खी पर तलवार से वार करने ही वाला था, तभी राजा के कमरे के पहरेदार ने उसे ऐसा करते देख लिया और उसने शोर मचा दिया। पहरेदार की आवाज सुनकर राजा की आँख खुल गई। उसने बंदर के हाथ से तलवार खींच ली। इस प्रकार राजा की जान बच गई। सारी बात पता चलने पर उसकी समझ में आया कि राजा को कभी भी मूर्ख सेवक या मूर्ख मित्र नहीं रखने चाहिए। उसने अपने सेवकों को बंदर को जंगल में छोड़कर आने का आदेश दिया।

शिक्षा—मूर्ख मित्र सदैव नुकसानदायक होता है।

2. वफादार नेवला

किसान और उसकी पत्नी के पास एक नेवला था। किसान और उसकी पत्नी उस नेवले से बहुत प्यार करते थे। एक दिन किसान खेत पर गया। घर पर उसकी पत्नी, नेवला और उसका छोटा बच्चा था। किसान की पत्नी नेवले को बच्चे की रखवाली के लिए छोड़कर पानी लेने गई अचानक कहीं से घर में एक साँप आ गया। नेवले की नजर साँप पर पड़ी। वह छोटे बच्चे के पालने की तरफ सरपट आ रहा था। नेवले ने उछलकर साँप की गर्दन दबोच ली। साँप और नेवले में जमकर लड़ाई हुई। अंत में नेवले ने साँप को मार दिया। थोड़ी देर बाद किसान की पत्नी पानी भरकर घर लौटी। द्वार पर खून ही खून देखकर और नेवले के खून से सने मुँह को देखकर किसान की पत्नी बहुत क्रोधित हुई। उसे शंका हुई कि नेवले ने उसके बेटे को मार दिया। वह गुस्से से पागल हो गई। इतने में किसान भी आ गया। उसने भी जब नेवले को खून से सना देखा तो क्रोधित होकर लाठी उठाई और नेवले को इतने जोर से मारा कि नेवला तुरंत मर गया। इसके बाद वे दोनों दौड़ते हुए अंदर कमरे में गए। बच्चे को सुरक्षित देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने कमरे के भीतर साँप को मरे हुए देखा, उन्हें अपनी गलती समझते देर नहीं लगी। वे दोनों विलाप करने लगे। किसान और उसकी पत्नी अपनी गलती पर बहुत पछताये।

(घ) घ. लोमड़ी और अंगूर

एक लोमड़ी भूखी–प्यासी जंगल में इधर–उधर भोजन की तलाश में भटक रही थी लेकिन उसे खाने को कहीं कुछ न मिला। तभी घूमते –घूमते वह अंगूरों के एक बगीचे में पहुँची। वहाँ बेलों पर पके–पके अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। बेलों पर लटकते पके अंगूरों को देखते ही भूखी लोमड़ी के मुँह में पानी भर गया। उसने अपने मन में सोचा कि आज तो मजे आ गए। इन मीठे रसीले, और पके हुए अंगूरों को खाकर मेरी भूख–प्यास सब मिट जाएगी।

ऐसा सोचकर लोमड़ी अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर उछल–उछल कर अंगूर के गुच्छों तक पहुँचने की कोशिश करने लगी। लेकिन अंगूर बेलों पर बहुत ऊँचे लटक रहे थे। इसलिए वह हर बार अंगूरों तक पहुँचने में नाकाम हो रही थी। लोमड़ी ने खूब कूद–फाँद की मगर वह अंगूरों तक पहुँच ही न सकी।

एक तो भूख के कारण पहले से वह अधमरी हुई जा रही थी। दूसरे अंगूरों को पाने के लिए उछल–कूद करने के कारण उसकी पसलियाँ भी हिल गई। अन्ततः थक–हारकर उसने अंगूर पाने की उम्मीद छोड़ ही दी और वहाँ से चलने लगी। जाते–जाते उसने अपने दिल को तसल्ली देने के लिए कहा—अंगूर तो खट्टे हैं, ऐसे खट्टे अंगूर कौन खाए।

शिक्षा—जब कोई मूर्ख किसी वस्तु को प्राप्त नहीं कर पाता तो वह उसे तुच्छ दृष्टि से देखने लगता है।

ङ. ईमानदार लकड़हारा

एक गरीब लकड़हारा था। वह लकड़ी काटकर किसी तरह अपनी आजीविका चलाता था। एक दिन वह जंगल में लकड़ी काटने गया। लकड़ी काटते समय अचानक उसके हाथ से छूटकर कुल्हाड़ी नीचे नदी में गिर गयी। बेचारा

लकड़हारा दु:खी होकर बैठ गया। सोचने लगा अब परिवार का पेट कैसे पालूँगा। वह जोर-जोर से रोने लगा। उसका रोना सुनकर जल के देवता को उस पर तरस आ गई। उन्होंने लकड़हारे से उसके रोने का कारण पूछा। लकड़हारे ने उन्हें पूरा किस्सा सुनाया। जल देवता ने जल में डुबकी लगाकर सोने की कुल्हाड़ी निकाली और उससे पूछा, " क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है ?" लकड़हारे ने कहा, "भगवान् मुझ, गरीब के पास सोने की कुल्हाड़ी कहाँ से आएगी? यह मेरी नहीं है।" जल देवता ने वापस डुबकी लगाई और चाँदी की कुल्हाड़ी निकाली और उससे पूछा, "यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?" लकड़हारे ने चाँदी की कुल्हाड़ी देखकर मना कर दिया। अन्त में देवता ने फिर से डुबकी लगाई, इस बार वह लोहे की कुल्हाड़ी लेकर-बाहर निकले। लकड़हारे ने खुशी से कहा, " हाँ, यही मेरी कुल्हाड़ी है। जल देवता ने उससे पूछा, "तुमने पहले सोने, चाँदी की कुल्हाड़ियाँ क्यों नहीं ली?" लकड़हारा बोला, "देव, वे मेरी नहीं थी, इसलिए मैंने नहीं ली।" जल देवता ने कहा, "मगर यह बात मैं तो जानता नहीं था। तुम वह कीमती कुल्हाड़ियाँ आसानी से ले सकते थे। वह लकड़हारा बोला, " किन्तु मुझे तो पता था और फिर जो चीज मेरी नहीं थी, मैं उसे कैसे लेता? यह तो बेईमानी होती। उस लकड़हारे की ईमानदारी देखकर जल देवता बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने लकड़हारे को सोने व चाँदी की वे दोनों कुल्हाड़ी भी उपहार में दे दी। साथ ही उसे वरदान भी दिया। वह अब पहले जैसा गरीब नहीं रहा, अमीर बन गया था।

शिक्षा—हमें लालची नहीं, ईमानदार बनना चाहिए।

17. अध्याय — पत्र-लेखन (Unseen Passage)

क. 1. गद्यांश का अर्थ—गद्य का अंश।

2. अपठित गद्यांश के लगातार अभ्यास से हमारी भाषिक क्षमता का विकास होता है। विचार, चिंतन तथा अवलोकन के गुणों का विकास होता है। विचार, चिंतन तथा अवलोकन के गुणों का विस्तार होता है। अपठित गद्यांश का अभ्यास स्वाध्याय की भावना विकसित करता है। इससे पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि पैदा होती है।

ख. 1. पुस्तकालय में किताबें, अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, चार्ट आदि होते हैं।

2. बच्चे पुस्तकालय की मेज पर बैठकर पढ़ते हैं।

3. बुधवार को पुस्तकालय की कक्षा होती है।

4. पुस्तक रखने के कक्ष को पुस्तकालय कहते हैं।

(2) 1. लोमड़ी भोजन की तलाश में भटक रही थी।

2. बेल पर अंगूर लगे हुए थे।

3. अंगूरों के गुच्छे बेल पर ऊँचे लटक रहे थे, इसलिए लोमड़ी अंगूरों के गुच्छे तक नहीं पहुँच पाई।

4. अंगूर खट्टे हैं।

(3) 1. वर्षा ऋतु में मेढ़क टर्राने लग जाते हैं।

2. वर्षा ऋतु को 'ऋतुओं की रानी' कहते हैं।

3. वर्षा ऋतु में धान, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि की फसलें उगाई जाती हैं।

(4) 1. खिलाड़ी गेंद फेंककर बल्लेबाज को आउट करने की कोशिश करते हैं।

2. क्रिकेट में दो टीमें खेलती हैं।

3. महेन्द्र सिंह धोनी, विराट कोहली।

(5) 1. समय का मूल्य समझने वाले ही उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं।

2. समय का सही नियोजन न कर पाने के कारण, कुछ लोग समय का सदुपयोग नहीं कर पाते।

3. नहीं, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है।

4. संसार की सबसे अनमोल वस्तु समय है।

18. अध्याय — संवाद-लेखन (Dialogue-Wrinting)

क. 1. दो मित्रों के बीच का संवाद

मुकेश—हैलो मित्र सुरेश! तुम्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुरेश—बहुत-बहुत धन्यवाद मित्र!

मुकेश— मित्र ये दिन तुम्हारे जीवन में प्रसन्नता, स्वास्थ्य और उमंग लाए।

सुरेश—धन्यवाद मित्र मुकेश! तुम शाम को आ रहे हो ना, मेरी जन्मदिवस की पार्टी में?

मुकेश—हाँ मित्र! मैं अवश्य आऊँगा, साथ ही तुम्हारे लिए उपहार भी लाऊँगा।

सुरेश—हाँ मित्र! उपहार की कोई आवश्यकता नहीं, बस तुम आ जाना।

मुकेश—ठीक है मित्र! शाम को मिलते हैं।

सुरेश—ठीक है मित्र! बाय, रखता हूँ फोन

मुकेश—बाय मित्र, एक बार फिर से जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई।

सुरेश—धन्यवाद।

2. संवाद लेखन में दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य हो रहे वार्तालाप को लिखित रूप में दिखाया जाता है। संवाद लेखन काल्पनिक भी हो सकता है और किसी की वार्ता को ज्यों का त्यों भी लिखा जा सकता है। इसमें संवाद एक-दूसरे से संबंधित होने चाहिए।

ख. फिल्म देखने गए दो मित्रों के मध्य संवाद

रमेश—अरे वाह! मित्र तुम भी यह फिल्म देखने आए थे ?

मुकेश—हाँ मित्र! मैं भी दंगल फिल्म देखने आया था। मैंने इस फिल्म की बहुत प्रशंसा सुनी थी।

रमेश—हाँ भाई! मुझे भी इसलिए रहा नहीं गया और देखने चला आया।

मुकेश—मुझे भी यह फिल्म बहुत अच्छी लगी। इसका यह डायलॉग, ''तेरा पापा हर जगह तुझे बचाने नहीं आएगा''। मुझे बहुत अच्छा लगा।

रमेश—जब गीता स्वर्ण पदक जीती तो मुझे बहुत अच्छा लगा।

मुकेश—यह फिल्म हमें यह भी बताती है कि यदि हमारे माता-पिता हमारे साथ हों तो हम कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं।

रमेश—हाँ! तुम सही कह रहे हो। यह फिल्म वास्तव में बहुत अच्छी है।

मुकेश—दंगल बहुत प्रेरणादाई फिल्म है। फिल्म के डायरेक्टर आमिर हैं। उनकी सभी फिल्में अच्छी होती हैं।

रमेश—इस फिल्म में सभी कलाकारों ने बहुत अच्छा कार्य किया है।

मुकेश—सही कहा मित्र! चलो अब घर चलते हैं।

ग. चिराग और उसकी बहन के मध्य संवाद

चिराग—दीदी! आज हमारी कक्षा में हिन्दी की नई अध्यापिका आई थीं।

बहन—अच्छा, क्या नाम है उनका? कैसा पढ़ाया उन्होंने ?

चिराग—उनका नाम मोहना है। उनका स्वभाव बहुत ही मधुर है। आज उन्होंने हिन्दी व्यापकरण का 'संवाद लेखन' विषय को समझाया।

बहन—क्या कक्षा में सबको उनका पढ़ाया हुआ समझ में आया ?

चिराग—हाँ दीदी! हम सबको बहुत अच्छे से समझ में आया।

●